''श्रीशः''

1. आराधना

प्रथम नमन गजवदन को,
सिद्धि सुलभ सब ओर,
गणपति के वर से मिलें,
धरा गगन के छोर ।

मानस गुरू को नमन है,
श्रद्धानत है शीष,
भैंरूनाथ प्रसन्न हों,
मिले सुखद आशीष।

गौरी शंकर इष्ट मम,
सकल सृष्टि आधार,
बने असंभव भी सरल,
नमन उन्हें शतबार।

तन सेवा, मुख जप करे,
श्रवण सुने हरि नाम,
निर्मल छवि निरखें नयन,
हृदय बसें श्री राम।

राधावर श्री श्याम का,
मन में रहे प्रकाश,
भावों की यमुना बहे,
सहज, सरल, सहवास।

वर दो माता शारदे,
सफल रहे हर काम,
विषय वस्तु संयत रहे,
संरचना अभिराम।

कमला पति जीवन करें,
धन–साधन संपन्न,
पग–पग पर उत्साह हो,
अन्तस् रहे प्रसन्न।

काव्य साधना विकट पथ,
पग–पग पर व्यवधान,
हर संकट बाधा हरें,
पवनतनय हनुमान।

दुर्गा कष्ट निवारिणी,
रखना मेरी लाज,
पूर्ण होय अभियान यह,
हरषे शिष्ट समाज।

सभी संत गुरूदेव संग,
रहें प्रसन्न उदार,
हर उलझन आसान हो,
उतरे बेड़ा पार।

भारत माता को नमन,
जिसकी कृपा महान,
सुलभ नहीं जिसके बिना,
तन, मन जीवन प्राण।

जन्मभूमि–ऋण–मुक्ति हित,
प्रस्तुत प्रबल प्रयास
भावों को भाषा मिले,
रचना को सुप्रकाश।

हरियाणा है स्वर्ग सम,
सुंदर, सुखद, ललाम,
सादा, जीवन, शुद्ध मन,
दया सिंधु बल धाम।

कहते गाथा नाम की,
हर वाहन, हरियान,
शंकर को प्रिय क्षेत्र यह,
रमें यहीं धनश्याम।

कभी सरस्वती का यहाँ,
रहा अटूट प्रवाह,
रही सभी में, भूमि को,
हरियाने की चाह।

हरि वाहन ! नंदी तुम्हें,
बारंबार प्रणाम।
प्रणवऊँ लुप्त सरस्वती,
सिद्ध करो सब काम।

2. परिवेदना

उन्नीस सौ पचहत्तर के बाद,
उत्कट अभिलाषा जगी –
भारत दर्शन की,
किन्तु धन–साधन के अभाव में
वृहत परिक्रमा संभव न हो सकी,
कुछ शारीरिक दुर्बलता ने,
कुछ अस्त–व्यस्त परिस्थितियों ने
प्रत्यक्ष भारत दर्शन का स्वप्न
साकार न होने दिया।
फिर जगी मानसिक परिक्रमा की अभिलाषा,
संकल्प किया –
महाकाव्यों के माध्यम से –
मन की जिज्ञासा शांत करूँ,
भारत अवलोकन की
बढ़ती पिपासा शांत करूँ।
तन निबल होता है

मन निबल नहीं होता।
तन ताकत खोता है
मन जीवट नहीं खोता।
मन की अभिलाषा ने,
मन चाही राह चुनी,
'विधुरा' महाकाव्य के कथ्य में
अवधपुरी, कैकय प्रदेश
लंका के परिवेश को गूँथकर
उत्तर में हिमगिरि से दक्षिण में
हिन्द महासागर की
मनचाही परिक्रमा कर डाली !!
उन्नीस सौ बयानवे –
– आया उल्लास लिये
'महाभारत रत्न' का उज्ज्वल प्रकाश लिये।
इस महाकाव्य में
असम की पर्वत श्रंखला से
राजस्थान के मरूथल तक
वृहत परिक्रमा संपन्न हुई।
चिर तृषित आत्मा प्रसन्न हुई।
एक बार फिर से
मन में नव जोश जगा
ब्रज से गुजरात तक
सिंधु से सरस्वती तट पर बसे
पावन कुरूक्षेत्र तक
फिर से परिक्रमा का उद्‌धोष जगा।
उन्नीस सौ अठानवें में
वेणु गोपाल महाकाव्य लिख डाला,
मन को फिर तुष्टि हुई,
पूरब से पश्चिम तक
उत्तर से दक्षिण तक
पूर्ण परिक्रमा की पुष्टि हुई।
किन्तु यह चंचल मन,
कार्तिकेय के समान
अब भी अशांत था।

दो हजार तीन ने
फिर से झकझोर दिया।
दक्षिण चल ! दक्षिण चल !
अन्तस् ने शोर किया।
पद्मेश महाकव्य लिख डाला।
विष्णु रूप व्यंकटेश,
कथ्य में समाहित थे,
उभर–उभर आते थे,
दृश्य मुखर दक्षिण के।
इस प्रकार मानस का कार्तिकेय,
साहस बटोरता,
चिंतन से, संकल्पित
पथ को, झकझोरता
अति विशाल भारत की
महती परकम्मा में मस्त था।
हिमगिरि का, हिम–मंडित, उच्च शिखर
अब भी समक्ष था।
इसीलिये एक बार फिर से नवजोश लिए,
उत्कट जिज्ञासा ले, शिखरों का घोष लिए
दो हजार तीन में, फिर से सचेत हुआ।
संस्कृत की सप्तशती, दुर्गा के कृत्यों का
भावानुवाद लिए,
पंचम महाप्रबंध अरूण पताका का
उद्गम समवेत हुआ।
इस प्रकार लगातार
अठाइस वर्षों तक,
मानस के सागर में
महाकाव्य – लेखन का
अनवरत ज्वार रहा !
इस मानस–मंथन से
इतना अवश्य हुआ,
स्वदेश दर्शन का
सपना प्रत्यक्ष हुआ।
वर्षों तक श्रम के उपरांत मैंने चीन्हा है

कार्तिकेय गणपति से
किस कारण हीना है !!
धरती के चक्कर में
कार्तिकेय व्यस्त थे
श्री गणेश शांत थे
अपने में मस्त थे !
कार्तिकेय, धरती की
परिक्रमा करके भी हार गए
मातृ–पितृ परिक्रमा से
श्री गणेश पार गए।
मैं भी इस महाकाव्य–लेखन की
अति विशाल परिक्रमा कर कर के हारा हूँ।
पाँच–पाँच महाकाव्य लिखे मगर,
अनुशंसा, क्षेत्र में
अब तक बेचारा हूँ।
मैंने अपने घर का
जन्मभूमि, परिसर का
अर्चन नहीं किया
पूजन नहीं किया
मैंने निज जन्म–भूमि–प्रेम को विसारा है
इसीलिये कार्तिकेय के समान
जीवन की दौड़ में
मेरे मन मानस का, सुप्रसिद्ध महाकवि
बौनों से हारा है।

3. प्रकल्पना

हे मन–मानस के हंस, अलस को त्यागो,
हो गई कभी की भोर, उठो, अब जागो !
जिसकी परिक्रमा बनकर लक्ष्य खड़ी है,
देखों तो, कितनी उसकी विभा बड़ी है।
इतिहास जानना अपना काम नहीं है,
हरियाणा इसका पिछला नाम नहीं है।

पहले यह अंग रहा, कितने खण्डों का,
था अतुल पराक्रम नृप के भुजदण्डों का।
यह रक्षक रहा सदा ही सत्यव्रती का,
यह था जोशीला रक्त, वीर धमनी का।
अस्तित्व छियासठ की सन् में पाया है,
यह नाम तभी से पृष्ठों पर आया है।
उस ओर शिवालक की पर्वत श्रेणी है,
दक्षिण में गुंफित अरावली वेणी है।
पूरब दिशि में उत्तर प्रदेश फैला है,
दक्षिण–पश्चिम में मरूथल मटमैला है।
हरियाणा इसका नाम बड़ा प्यारा है,
इसके पीछे व्यापक विचाराधारा है।
इस पुण्य क्षेत्र में रथ अर्जुन का घूमा,
अर्जुन ने हरि के बल पर जय को चूमा।
हरियान आज भी विजय प्रतीक बना है,
वह कुरूक्षेत्र में मूरत बना खड़ा है।
विश्वास एक है और नाम का कारण,
संभव है यह भी होगा मन को धारण।
शिव शंकर को भक्तों ने हर माना है,
हर का वाहन है बैल न अनजाना है।
बहुधान्यक है यह क्षेत्र जगत ने जाना,
हर–बैल योग से नाम पड़ा हरयाना।
है लोग श्रमिक, पशुपाल, अतुल बलशाली,
बंजर धरती को भी कर दे हरियाली।
इनसे सीखा जग ने भू को हरियाना,
बस इसी काम से नाम पड़ा हरियाणा।
दिल्ली को हमने भारत का दिल माना,
तो भारत के दिल की धड़कन हरियाणा।
हैं बड़े भाग्य, हमको वह क्षेत्र मिला है,
जो सरवर में पंकज की भाँति खिला है।
इस धरती से संबंध रहा है उनका,
यह आज तलक संसार ऋणी है जिनका।
यह च्यवन–सुकन्या की पावन धरती है,
जिनकी क्षमता पर सृष्टि गर्व करती है।

गुरू द्रोण यहीं पर शस्त्रज्ञान देते थे,
कौरव पांडव भी उन्हें मान देते थे।
कवि सूरदास की यहीं गूँजती वाणी,
स्वर–ताल बद्ध, प्रभु–प्रेम भरी, कल्याणी।
कवि शंभुदास, कवि नितानंद से ज्ञानी,
जिनके मोती से शब्द, भाव नूरानी ।
थे आशुकवि श्री नंदलाल, बख्तावर,
नत मस्तक थे सब लोग, प्रखर प्रतिभा पर।
पंडित लखमीचंद मधुर रागिनी वाले,
जिनकी रचना पर लोग हुए मतवाले।
है जग प्रसिद्ध कवियों का घर हरियाणा,
कण्ठस्थ शारदा, भाव, ताल–स्वर, गाना।
हरियाणा सिद्धों, संतों का आकर है,
लगता है ईश्वर अति प्रसन्न इस पर है।
अनगिन संतों ने यहाँ तपस्या की है,
वश में उनके सिद्धियाँ अनेक रही हैं।
सारा हरियाणा संतों की धरती है,
अनगिनत कथाएँ यही सिद्ध करती हैं।
सिरसा में ' सच्चा सौदा' क्षेत्र बड़ा है,
जिनके दर्शन को जनमानस उमड़ा है।
दक्षिणी क्षेत्र के संत बड़े तपधारी,
जिनकी गाथाएँ दोहराते नर नारी।
बाबा रामेश्वरधाम प्रतिष्ठा भारी,
ये अन्नपूर्णा सिद्ध संत तपधारी।
बस एक पात्र से ही प्रसाद देते थे,
अनगिन भक्तों को तृप्त किया करते थे।
था नित अटूट भंडार, न होता खाली,
बिन धन चलती थी सब बातें धन वाली।
है स्वर्ग धाम बन खडा आज भी मन्दिर,
है अतुल शांति आगार भवन के अन्दर।
थे बाबा भैरूंनाथ खोल के अन्दर,
थे सिद्ध पुरूष साकार, स्वयंभू शंकर।
हठयोगी, परम तपस्वी, अडिग, यती थे,
तपते धूना, निर्वस्त्र, निरान्न व्रती थे।

उनकी गाथाएँ चमत्कार दिखलाती,
उनकी वाणी मृत में भी प्राण जगाती।
पर्वत उनको झुकते, प्रसन्न गोमाता,
वर्षों से जगता दीप तथ्य बतलाता।
थे बाबा खेतानाथ अतुल तपधारी,
नंगे तन रहकर तप करते थे भारी।
जिस टीले पर उनका आसन रहता था,
वह तपते मौसम में भी हिम रहता था।
जन सेवक, शिक्षा साधक, पर–उपकारी,
साखी हैं मन्दिर, विद्यालय फुलवारी।
बाबा जयराम दास अतुलित वरदानी,
वरदायक जिनकी सदा अटपटी वाणी।
मरते बालक को जीवन दान दिया था,
एक योगी ने विधि का अपमान किया था।
तप से तन को क्षत विक्षत कर लेते थे,
निष्प्राण देह में जीवन भर लेते थे।
थे जैन तपस्वी अमर मुनि कवि, ज्ञानी,
अंकित है अमर ग्रंथ में जिनकी वाणी।
थे हरियाणे की देन सकल अग–जग को,
कर दिया ज्ञान से सुगम मुक्ति मारग को।
बाबा फरीद सूफी मत के पैगांबर,
उनकी अनुकंपा थी हिंदू–मुस्लिम पर।
थे हमजा, तुर्कमान रति हरियाणे की,
थी उन्हें लगन अनुकंपा बरसाने की।
है कई ज्ञात–अज्ञात संत इस भू पर,
जिनका वजूद था हरियाणे के ऊपर।
सिद्धों संतों की दया हमें मिलती है,
बस तभी स्वर्ग से अच्छी यह धरती है।
थे हरियाणा के देशभक्त लासानी,
इतिहास बताता उनकी अमर कहानी।
थे वीर लाजपतराय रत्न भारत के,
जन्मे हिसार में किन्तु जगत में चमके।
थी जितनी लगी लाठियाँ उनके तन पर,
वो कील बनी, इंगलिश सरकार कफन पर।

'पंजाब केसरी' लोग उन्हें कहते थे,
तन मन से सब अनुशासन में रहते थे।
था उनका ऋणी समाज, मुखर थी वाणी,
आजादी हेतु लुटा दी भरी जवानी।
थे पंडित नेकीराम भिवानी वाले,
'संदेश', पत्र संपादक, वीर निराले।
गांधी नेहरू के सत्याग्रह सहयोगी,
अनगिनत यातनाएँ जीवन भर भोगी।
सेवक समाज के देशभक्त मतवाले,
दुष्टों के दुश्मन, मानव के रखवाले।
रहबर किसान के, नेता साहस वाले,
राष्ट्रीय एकता की पतवार संभाले।
श्री छोटूराम चौधरी रोहतक वाले,
वक्ता थे परम प्रवीण अटल मतवाले।
वो पक्ष गरीबों का लेते रहते थे,
इसलिये उन्हें सब दीन बंधु कहते थे।
देहाती कृषक समाज उन्हें भाता था,
निर्बल जन से उनका अटूट नाता था।
गुप्ता श्री बालमुकुंद गांव गुड़ियाणी,
परतंत्र देश में गूंजी जिनकी वाणी।
अंग्रेजी शासन से विरोध था भारी,
थी पत्रकारिता में उनकी छवि–न्यारी।
वो निर्भय 'भारत मित्र' प्रकाशित करते,
उसके पृष्ठों में जनाक्रोश थे भरते।
थे देश धर्म, मानव समाज हितकारी,
लगती थी उनको बस आजादी प्यारी।
थे रेवाड़ी के राव आत्म–अभिमानी,
अब तक गुंजित है जिनकी अमर कहानी।
श्री तुलाराम आजादी के परवाने,
उनकी गाथा भारत के जन–जन जाने।
अंग्रेजी सेना उनको जीत न पाई,
वीरों के कारण भीषण मची तबाही।
वह नारनौल का युद्ध भयानक भारी,
अंग्रेजी अफसर मरा हुई लाचारी,
अंग्रेजी सेना का पलड़ा था भारी,
इसलिये देश ने जीती बाजी हारी।

वीरों ने हँस–हँस अपने प्राण गंवाए,
स्वातंत्र्य–हवन में अनगिन शीष चढ़ाए।
नेता सुभाष की भाँति राव भी धूमे,
आजादी के पथ के शत कंटक चूमें।
काबुल में तुलाराम ने प्राण गँवाए,
होकर शहीद वो जनमानस पर छाए।
थे अकबर के नवरत्नों में जग जाने,
हँसमुख, पटुतर, नीतिज्ञ, प्रवीन, सयाने।
अकबर अक्सर उन ही से बतियाता था,
सामंत बीरबल का हमसे नाता था।
जिसके किस्सों से दुनिया दिल बहलाती,
वह प्रतिभा थी इस नारनौल की थाती।
है अमर शहीदों की धरती हरियाणा,
सिद्धों, सामंतों की धरती हरियाणा।
इसकी परिक्रमा अवसर परम सुहाना,
विख्यात सपूतों की धरती हरियाणा।

***

आज भी हरियाणे के पास,
अनेकानेक कला–विन्यास।
चकित हैं जग, प्रतिभाएँ देख,
लगाते वीर रेख पर मेख।
अतुल साहस के धनी अनेक,
एक से बढ़कर लगता एक।
परम कल्पना चावला वीर,
बढ़ गई नभ में अंबर चीर।
न मन में यास न चित्त अधीर,
धनुष से निकला जैसे तीर।
गगन से ऊँची अमर उड़ान,
कर गई ऊँची सबकी शान।
छपक् से सागर तल में बैठ,
शान से यम के घर में पैठ।
किया जीवन का शुभ श्रृंगार,
शान से पहुँची परली पार।
धन्य है पुण्य भूमि करनाल,
जहाँ बाला ने किया कमाल।

धन्य है पावन अपना देश,
जहाँ वीरत्व हुआ न अशेष।
कल्पना शत् शत् तुम्हें प्रणाम,
रहेगा अमर तुम्हारा नाम।
योग–पटु रामदेव महाराज,
कर रहे कोटि दिलों पर राज।
योग बल का लेकर आधार,
दुखी जन नैया खेवनहार।
धन्य है सैदअलीपुर ग्राम,
जहाँ पर जन्मा पूत ललाम।
स्वास्थ्य का सैंधव, योग, लगाम,
चढ़ा कर मानव को अविराम।
रोग–रिपु का करते संधान,
कर रहे रोग मुक्त इंसान।
योग से डरता था इंसान,
इसे वैरागी साधन जान।
जोड़कर इसको तन से आज,
योग–रत किया मनुष्य समाज।
न हिंदु, मुसलमान में भेद,
बढ़े नफरत की छाती छेद।
'पंतजलि योग पीठ' हरद्वार,
हुआ अनुपम सपना साकार।
जगत अब उनको रहा निहार,
मानता निर्विवाद अवतार।
विश्व के नाम, सहज, साभार,
'देव' हरियाणे का उपहार।
आज ही का देखें अखबार,
मिलेगा यह प्रमाण साकार।
आज भी युग प्रवाह के साथ,
बढ़ रहा हरियाणे का हाथ।
हिसारी छवि साइना नेह्वाल,
बैंडमिंटन में करे कमाल।
खेल खेला मलेशिया बीच,
पारियां श्रम साहस से सींच।

विश्व की नंबर एक खिलार,
साइना से खा बैठी हार।
कृषक सुल्तान सिंह करनाल,
जगत के अनुपम मछली पाल।
किया अमरीका में संधान,
सफल गुणवत्ता का व्रत ठान।
एक सौ तेहत्तर थे देश,
मिल गया सबसे प्रथम प्रवेश।
धन्य हरियाणे का इंसान,
वेष साधारण कृत्य महान।
रिवाड़ी की यादव संतोष,
हृदय में लेकर अतुलित जोश।
हिमालय एवरेस्ट अभियान,
सफल कर लिया स्वत्व पहचान।
प्रथम बाला के थे वो पाँव,
शिखर पर पड़े लिये सद्भाव।
शिखर पर फहरा राष्ट्र निशान,
बढ़ाई हरियाणे की शान।
न जाना भूल उन्हें भी मीत,
जिन्हें थी हरियाणे से प्रीत।
जिन्होंने पकड़ प्रगति की डोर,
मिलाए धरा गगन के छोर।
स्वयं पहना काँटों का ताज,
प्रगति में किया हमें सरताज।
धन्य हरियाणे के त्रयलाल,
भजन, बंसी और देवीलाल।
भले हो कला, योग, विज्ञान,
नीति हो या नभ मध्य उड़ान।
बढ़े सब अपना सीना तान,
किए अर्पित तन, मन, धन, प्राण।

***

हे मानस खग अंबरगामी,
अति कोमल, अति पटु, प्रिय प्राणी।

सुंदर कल्पित रूप तुम्हारा,
सकल जगत में सबसे न्यारा।
शिथिल गात की चंचल रचना,
हो साकार तुम्हारा सपना।
परिक्रमा हो पूर्ण तुम्हारी,
परिणति हो सुंदर, अति प्यारी।
कुछ संकेत हृदय में धारो,
फिर परिक्रमा हेतु पधारो।
पंचकुला का रूप निहारो,
फिर अंबाला में पग धारो।
कुरूक्षेत्र, करनाल, सजीले,
यमुनानगर जमुन–तट गीले।
सोनीपत, पानीपत, कैथल,
मगन व्यस्त जीवन, अति चंचल।
लखो फरीदाबाद सलौना,
औद्योगिक नगरों में सोना।
गुरूग्राम का हाल दिखाना,
फिर तुम सत्यमेव पुर जाना।
देखो रेवाड़ी की शोभा,
और महेन्द्रगढ़ की आभा।
रोहतक, जींद, हिसार, भिवानी,
मधुर भावना, कड़वी वाणी।
झज्जर सिरसा की छवि प्यारी,
फतेहाबाद यथा फुलवारी।
तुम अति सूक्ष्म दिव्य तन धारी,
अन्तरंग तक पैठ तुम्हारी।
सरस्वती का दर्शना करना,
संतों का अभिवादन करना।
अर्जुन का रथ छूकर आना,
नंदी का संदेशा लाना।
पृष्ठभूमि अन्तस् में रखना,
वर्तमान का रूप निरखना।
जो भविष्य मानस पर छाए,
उसकी स्मृति जाने न पाए।

ईश्वर तुम्हें सुपंथ दिखाए,
हर रहस्य हर भेद बताए।
शिथिल, स्थूल तन से, हो न्यारा,
बना रहे सम्पर्क तुम्हारा।
धरती नभ पाताल प्रवासी,
तुम्हें न व्यापे कभी उदासी।
अविरल हो उत्साह तुम्हारा,
प्रतिपल गतिमय जीवन धारा।
सकल विहंगम दृश्य दिखाना,
आकर हर संदेश सुनाना।
विदा विहंगम अब तुम जाओ,
ईश्वर करे सफलता पाओ।

4. मानस परिक्रमा (विहंगावलोकन)

दिया जो तुमने मुझे शरीर,
न उसमें व्यथा न उसमें पीर।
तीव्र गति शीतल पवन समान,
दृष्टिगत सभी दृश्य छविमान।
न मुझको ताप, शीत का ध्यान,
न वर्षा का अवरोध–वितान।
न लगती भूख, न लगती प्यास,
नहीं कम होता हृदयोल्लास।
रात–दिन मुझको एक समान,
असीमित हुआ अलौकिक ज्ञान।
पलक में पैठ सिंधु के बीच,
निकालूं रतन पयोधि उलीच।
शिखर हिमगिरि तक भरूँ उड़ान,
निहारूँ अपलक निशा विहान।
भेजता पहला रेखा–चित्र,
शिवालक की चोटी से मित्र।
दूर शिखरों तक लख हिमपात,
हो रहा ऐसा मुझको ज्ञात –

''उड़ चला वारिद–विहग ललाम,
शिखर पर कर थोड़ा विश्राम।
हिमानी पंखों पर दो चित्र
विखरता नीड़ बिछुड़ते प्राण।
हुई है अभी यहाँ पर भोर,
धुंध में अलसाता पिंजोर।
सामने यादवेन्द्र उद्यान,
झूलता उपवन कहे जहान।
राजसी महलों का विन्यास,
महकती वल्लरियों के साथ।
बहुत सुंदर है सुकना झील,
अतल जल फैला मीलों मील।
हजारों पक्षी करें विहार,
पर्यटक खुश, परिवेश निहार।
रॉक उद्यान, रोज उद्यान,
धरा पर नंदन विपिन समान।
चहकते चिड़ियाधर की चहक,
महकते उद्यानों की महक।
उत्तरी हरियाणे का छोर,
रूपहली रात, सुनहरी भोर।
व्यस्त अति अंबाला के लोग,
यहाँ विज्ञान बना उद्योग।
बहुत विस्तृत है हर बाजार,
पल्लवित औद्योगिक व्यापार।
पश्चिमी सेना का संचार–
–नियंत्रण, मुख्यालय का भार।
यहीं पर सैनिक शस्त्रागार,
सुरक्षित यहाँ सभी हथियार।
व्यस्त जीवन से थोड़ी दूर,
प्रकृति का फैला अनुपम नूर।
मोरनी पर्वत माला बीच,
रही कुदरत सुंदरता सींच।
सुहाना, सुंदर, सुखद, सुवेश,
मोरनी का मनहर परिवेश।

पहाड़ी वृक्षों की भरमार,
मनोहर फूलों का संसार।
चहकते खग, भरते उत्साह,
सरल करते जीवन की राह।
प्रकृति का यह चंचल सहयोग,
हरे चिंता, हर दुख, हर रोग।
चलें अब हम दक्षिण की ओर,
सुन रहा कुरूक्षेत्र का शोर।
कुरू का दिव्य नगर छविमान,
सरस्वती तट पर बसा ललाम।
महाभारत का संगर–क्षेत्र,
जिसे नृप ने देखा बिन नेत्र।
व्यास की रचनाओं का धाम,
बृहस्पति, पाराशर की शान।
यशस्वी, ज्ञानी, रचनाकार,
सभी का कुरूक्षेत्र आगार।
यहीं रमते अश्विनी कुमार,
देवताओं के पालनहार।
तपस्वी कश्यप परम सुजान,
यहीं देते शिष्यों को ज्ञान।
यहीं पर श्रृंगी ऋषि गुणधाम,
यज्ञ में पारंगत, विद्वान।
उन्हीं से लेकर शुभ वरदान,
मिली थी दशरथ को संतान।
यहीं सारथी बने भगवान,
दिया अर्जुन को गीताज्ञान।
इसी गीता के कारण आज,
विश्व का भारत है सरताज।
विश्व का अद्वितीय सद्ग्रंथ,
जिसे आदर देता हर पंथ।
पितामह भीष्म, यहीं कुछ मास,
झेलते रहे शरों का त्रास।
ब्रह्मचारी सद्व्रती महान,
लिये इच्छा मृत्यु वरदान।

योगबल से जीवित सोल्लास,
काल का किया अभय उपहास।
यहीं अर्जुन ने सायक मार,
बाण गंगा का कर संचार।
बुझाई भीष्म पिता की प्यास,
जगी मृत में जीवन की आस।
महाभारत का युद्ध महान,
चला सत्रह दिन तक अविराम।
क्षेत्र में बहता रक्त निहार,
क्षुब्ध थी सरस्वती की धार।
अनमनी बही यहाँ कुछ काल,
लुप्त हो पैठ गई पाताल।
बदल कर दिशा जमुन के संग,
ग्रहण कर गुप्त मार्ग निर्द्वंद्व।
अतल से पहुँच त्रिवेणी धाम,
आज भी उद्‌भासित अविराम।
ज्योति सर, ब्रह्म सरोवर ताल,
सरस्वती के अवशेष विशाल।
विगत का धर्मक्षेत्र अभिराम,
आज भी है अद्‌भुत छवि धाम।
जिले में कुरूक्षेत्र सम आन,
पेहोआ भी है पावन धाम।
जैन तीरथ छवि पुंज ललाम,
यहीं पर बारह पंथी धाम।
ययाति नृप ने कर संधान,
किया बलि यज्ञ यहीं व्रत ठान।
कलायत का आश्रम छविमान,
कपिल मुनि के तप का परिणाम।
पास है थानेसर छवि–रेख,
ऐतिहासिक विशाल रणक्षेत्र।
बाण–कवि का साहित्य ललाम,
यहीं पर लिखा गया अविराम।
शेखचिल्ली की शुभ दरगाह,
जहाँ पूरी हो सब की चाह।

यही थानेसर राज्य विशाल,
मुद्रिका में ज्यों जड़ा प्रवाल।
हर्षवर्द्धन का विस्तृत राज्य,
संगठित धर्मक्षेत्र अविभाज्य।
आश्रित दरबारी कवि बाण,
काव्यकृति कांदबरी महान।
कि जिनका हर्ष चरित इतिहास,
राज्य छवि का अनुपम विन्यास।
धर्म आधारित शासन कार्य,
मान्यताएँ जनहित अनिवार्य।
हर्ष थे शिव के भक्त अनन्य,
किन्तु प्रिय थे प्रचलित मत अन्य।
प्रतिष्ठित सर्वधर्म समभाव,
न मन में रहा कभी अलगाव।
यहाँ हर बार पांचवी साल,
धर्म सम्मेलन हुए विशाल।
हर्ष थे दानी परम उदार,
कोष, धन, वैभव, अन्नागर।
दान कर देते थे हर बार,
मोह–माया, अनुरक्ति विसार।
पर्यटक चीनी ह्यूनसांग,
हर्ष का मीत, समय की मांग।
हर्ष का मानवता से प्यार,
नीति, शासन, मति सद्व्यवहार।
लिखा सच उसने मति अनुसार,
परम विश्वस्त, सहित विस्तार।
विशद् है थानेसर इतिहास,
प्रदर्शित करता विगत विकास।
नगर कैथल सुंदर छविमान,
प्रकाशित जहाँ वीर हनुमान।
यहाँ बजरंग भक्त नरनार,
करें श्री राम भक्त से प्यार।
यहाँ ऋषि पुंडरीक का धाम,
सिद्ध मुनियों में जिनका नाम।
आधुनिक युग का प्रबल प्रभाव,
उत्तरी हरियाणे का चाव।

व्यस्त जीवन उन्मुक्त विचार,
पश्चिमी सोच, मुखर व्यवहार।
सुलभ हैं सब सुख–साधन आज,
हुआ सुख भोगी मनुज समाज।
सभी अपनो अपनो में मस्त,
रात–दिन उद्योगों में व्यस्त।
व्यस्त है दिवस, रंगीली रात,
प्रगति की यही सुखद सौगात।
यहाँ सुग्गा विश्रांति–विहार,
पर्यटक हेतु शांति आगार।
करें हम आज यही विश्राम,
थकित वाणी को मिले विराम।

***

मन हल्का हो गया फूल सा,
कुरूक्षेत्र में कर विश्राम।
युद्धभूमि पर मिला किसी को,
कभी शांतिमय पूर्ण विराम।।
जहाँ बहा वीरों का शोणित,
जहाँ गिद्ध, चीलों का वास।
जहाँ रक्त चंदन सी मिट्टी,
जहाँ पटी लाशों पर लाश।
जो अतीत की व्यथा समेटें,
अब तक बैठा रहा उदास।
आज वहीं पर देखा मैंने,
जन जन के मुख पर उल्लास।
आज्ञा दें, आगे बढ़ता हूं,
कर्ण झील में करके स्नान।
कर्णभूमि करनाल देखकर,
उसकी गरिमा करूँ बयान।
मध्य क्षेत्र हरियाणे को सब,
वीर भूमि का देते नाम।
साक्षी है इतिहास, यहीं पर,
हुए भंयकर, तम संग्राम।
रोहतक, पानीपत, सोनीपत,
कैथल, कुरूक्षेत्र, करनाल।

हरियाणे का शौर्य क्षेत्र हैं,
भाषा खड़ी चटकती चाल।
अब तक इस प्रदेश के वासी,
देते हैं शब्दों पर जोर।
बातें करते ऊँचे स्वर में,
हँसकर मिलते बाहें खोल।
नारी हैं जगती चिंगारी,
मेहनत में ना नर से घाट।
किन्तु हृदय में खोट न इनके,
तन तगड़ा, मन सरल सपाट।
करण झील में शीतल जल का–
स्नान रहेगा मुझको याद।
रंग बिरंगे पंछी जल पर,
जल में, नभ में, करे प्रमाद।
देख रहा हूँ– हरियल धरती,
बिछा जहाँ नहरों का जाल।
चावल, गेहूँ, गन्ना, निरमा,
जन–जीवन को करें निहाल।
पानीपत की धरा रसीली,
स्वाभिमान में पूर्ण सतर्क।
'पानी' भी इज्जत का द्योतक,
'पत' का भी है लज्जा अर्थ।
दिल्ली के सिंहासन के हित,
हुए यहाँ अनगिन संग्राम।
मुगल वंश से पूर्व रहा यह,
शक्ति–प्रदर्शन का मैदान।
यहीं हुआ लोधी शासक से,
मुगलों का भीषण संग्राम।
इब्राहीम मिला माटी में,
मुगलों ने ली छीन लगाम।
है प्रसिद्ध इस युद्ध भूमि पर,
क्षत्रय हेमू का बलिदान।
इस भू ने दी, हार किसी को,
और किसी को जय का दान।

मध्यकाल में इस धरती पर,
जन्मे कई शांति के दूत।
दृष्टि समन्वयवादी लेकर,
साधन रत, बाबा, अवधूत।
पीर बू अलीशाह कलंदर,
सिद्ध तपस्वी हाली शाह।
सब का भला चाहने वाले,
लोभ लाभ से बेपरवाह।
आज उन्हीं संतों के कारण,
सुखिया पानीपत के लोग,
व्यवसायी उत्तम श्रेणी के,
संचालित करते उद्योग।
हथकरघा उद्योग यहाँ पर,
खुशहाली का शुभ आधार।
युद्ध नहीं अब मिले यहाँ पर,
शांति, विभव, जन–जन में प्यार।
बाल–वाटिका फूलों वाली,
छोटी सी, कृत्रिम सी झील।
सुबह शाम मन, बहलाते, सब,
कार्य दिवस हो या तातील।
इसी भाँति सोनीपत भी अब,
औद्योगिक परिवेश बनाय।
विविध वाहनों को निर्मित कर,
करता है सुखमय व्यवसाय।
एटलस साईकल निर्माता,
सोनीपत कहलाता आज।
वाहन, ट्रैक्टर, ट्रक का दाता,
सोनीपत–उद्योग–समाज।
रोहतक की धरती, गाती नित,
यौधेयों की कीर्ति महान।
रही सदा ही वसुंधरा यह,
कुशल महावीरों की खान।
कौरव सेना यहीं शिविर में,
रहती थी कर युद्ध विराम।

होती थी हर रात मंत्रणा,
और सुबह रणहित प्रस्थान।
स्वामी कार्तिकेय की नगरी,
सिद्ध गोकरण तीर्थ महान।
मस्तनाथ, गोरख का धूणा,
पूर्ण भक्त का लीला धाम।
ज्ञान पीठ हरियाणे की यह,
देती सब विषयों का ज्ञान।
ऐजुकेशन सिटी बनेगा,
जग जाहिर हो इसकी शान।
कभी रही थी समर भूमि यह,
नगर प्रथम श्रेणी का आज।
धन की नगरी, धान्य कोष यह,
हँसमुख, चतुर, प्रवीण समाज।
मानसरोवर पार्क मनोहर,
मीलों फैली तिलियर झील।
आकर्षक सुंदर, सुखदायक,
ज्यों जगमग दिल की कंदील।
दुर्गाभवन मनोहर सुंदर,
प्रस्थापित नगरी की बीच।
करे पाप से मुक्त सभी को,
अंतस् में अमृत–कण सींच।
यहीं पार्क के मध्य विराजें,
दीनबंधु श्री छोटूराम।
कृषक वर्ग के शुभचिंतक का,
अंकित जन–मानस पर नाम।
उत्तर मध्य क्षेत्र में बाकी,
यमुनानगर शांति का धाम।
यमुना के तट पर होने से,
मिला इसे यह सुंदर नाम।
यमुना का अविभाजित पानी,
ताजे वाला तक अविराम।
बहता रहता कल कल करता,
प्रस्तुत करता छवि अभिराम।

यहीं रोककर जमना जल को,
वारि–विभाजन हुआ तमाम।
इसीलिये जमना जल पहुँचा,
दूर दूर दक्षिण के गाँव।
लिफ्टों के माध्यम से जल ने,
बदला अपना सहज स्वभाव।
नीचे से ऊपर ही ऊपर,
चढ़ते देखा वारि–प्रवाह।
यह अद्‌भुत वैज्ञानिक क्षमता,
वायु अग्निजल सहज स्वभाव।
बदल लिया करते हैं अक्सर,
स्वीकृत कर वैज्ञानिक दाँव।
कालेसर पक्षी विहार है,
बिल्कुल यमुना तट के पास।
देशी और विदेशी पंछी,
यहाँ करें आनंद–विलास।
यद्यपि सुलभ यहाँ पर सब सुख,
प्रकृति नटी का हास–विलास।
पर इन सबका रूप निहारे,
समय कहाँ मानव के पास !
पिलता जाता ईख सरिस वह,
चौबीस घंटे, आठो याम।
घेरे रहते हैं उसको नित,
पैसा, साधन, बोझिल काम।
उसे कहाँ फुर्सत है देखे,
दृश्य सुहाने, कलरव, भोर।
उसकी दृष्टि जमी रहती है,
रैन–दिवस पैसे की ओर।
कहता है यह भेद सभी से,
गहराता कागज उद्योग।
आज प्रकृति–सौंदर्य छोड़कर,
भाता है मानव को भोग।
मैंने दृश्य निहारे जी भर,
कोलाहल से रहकर दूर।

शांत, अहिंसक धर्म–क्षेत्र यह
सदा रहा संगर से दूर।
उड़कर आया परिक्रमा हित,
उत्तर से पूरब की ओर।
मन में जिज्ञासा यह जागी,
देखूँ अब दक्षिण का छोर।
प्रदक्षिणा की रीति यही है,
घटिकावत् हो अपनी राह।
उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम,
हो चलने का क्रमिक प्रवाह।
देख रहा हूँ पूर्व दिशा में,
उद्यम नगर फरीदाबाद,
दिल्ली महानगर, से लगता
उद्यम केन्द्र गहन आबाद।
दिल्ली से जब हम बढ़ते हैं,
औद्योगिक नगरी की ओर।
पता नहीं लग पाता है कब,
आ जाता है अगला छोर।
बड़े बड़े उद्योग देख मन,
हो जाता आनन्द विभोर।
यहाँ पुरातन लुप्त हो चुका,
हावी है नवयुग का दौर।
जुड़े हुए जुड़वां बच्चों सम,
दिल्ली और फरीदाबाद।
बहुत व्यस्त जीवन लगता है,
स्पष्ट यहाँ धन का उन्माद।
यहाँ भीड़ में सभी अकेले,
लड़कर लेते हैं अधिकार।
रैन–दिवस सर पर रहती है,
धन–अर्जन की मारामार।
किन्तु यहाँ पर भी कुदरत ने,
स्थापित करके झील विशाल।
खग–कलरव नौका–विहार से,
किया क्षेत्र को मालामाल।
समय बचाकर धन–चक्कर से,
आते हैं बड़खल पर लोग।

निरख दृश्य, मनहर, रस–भीने,
करते हैं आनंद–प्रमोद।
सूरजकुंड समीप, जहाँ पर
लगता है मेला हर साल।
यहाँ दीखता है, मिलता है,
हस्तकला से निर्मित माल।
नहीं व्यस्तता केवल काफी,
हल्का करने प्रबल तनाव।
सुंदर दृश्य, मधुरता का भी,
हमें चाहिये विपुल प्रभाव।
ब्रज चौरासी में आता है,
होडल का बंचारी गाँव
ब्रज की, संस्कृति से मिलते हैं,
गोधन, मधुबन, नागर, नाम।
वृक्षों की भरमार यहाँ पर
रंग भरा होली त्यौहार,
फूल डोल चौफई लोकधुन,
होडल की संस्कृति का सार।
पंडुवन की सुंदर अटवी यह,
परम मनोहर त्यागी–धाम।
यहीं कहीं सुंदर झुरमुट में,
चलों करें सुख से विश्राम।

***

रात भर मैं नींद में सुनता रहा,
हर दिशा में शब्द चौकीदार का।
इस तरफ था शोर राधे नाम का,
उस तरफ था नाम सुंदर श्याम का।
संत तुलसीदास भी ब्रजधाम में,
चकित थे रूचि देख राधे–श्याम में।
कह उठे थे – 'सत्य ही ब्रजधाम का–
बच्चा–बच्चा भक्त राधेश्याम का।
कष्ट हो या सुख, सभी के पास में,
नाम श्री राधे बसा हर साँस में।

तृप्त होकर नाम ले धनश्याम का,
उड़ चला मैं, पथ पकड़ गुरूग्राम का।
शीतला का क्षेत्र, गुरू का धाम है,
धर्म में, शिक्षा जगत में नाम है।
आश्रम विद्वान द्रोणाचार्य का,
जग प्रशंसक था प्रशिक्षण कार्य का।
भीम, अर्जुन द्रोण के प्रिय छात्र थे,
द्रोण की नजरों में उत्तम पात्र थे।
राजवंशी बालकों के वास्ते,
शस्त्र–शिक्षा के खुले थे रास्ते।
भील–सुत एकलव्य ने बतला दिया,
सत्यनिष्ठा भी दिलाती सफलता।
अलग रहकर भी गुरू के धाम से,
मात्र रख संबंध छवि से, नाम से।
शिष्यवत् संयम, लगन, अभ्यास कर,
बन गया एकलव्य उत्तम धनुर्धर।
भाग है सोहना जिला गुड़गांव का,
तीर्थ है यह भी विचित्र प्रभाव का।
गर्म जल का कुण्ड गंधक युक्त है,
चर्म रोगों के लिये उपयुक्त है।
जल गरम इतना कि चावल भी पकें,
ताजगी पाते यहाँ हारे थके।
आज भी गुड़गांव शिक्षा–सिंधु है,
और नवयुग के गगन का इंदु है।
मारूति उद्योग जग–विख्यात है,
यह अनोखे स्वप्न जेसी बात हैं।
नगर यह वरदान दिल्ली के लिये,
है सुखद परिणाम दिल्ली के लिये।
रात को विश्राम कर गुड़गांव में,
जन करें प्रस्थान दिल्ली के लिये।
यह नगर सुख–शांति का संधान है,
इस नगर में वैर का क्या काम है।
सांप्रदायिक द्वेष से यह मुक्त है,
नगर जीवन के लिये उपयुक्त है।

इस जिले के साथ ही मेवात है,
मेव लोगों के लिये सौगात है।
आज भी भोले यहां के लोग हैं,
नव–पुरातन का अजब संयोग हैं।
आज भी पल्लू में गेहूं डालकर,
चीज लेते हैं अनाज निकालकर।
मस्जिदी तालीम में विश्वास है,
राज्य–विद्यालय यहां उपहास हैं।
लोक–संस्कृति में बसा इस्लाम है,
शांति इनका धर्म है, ईमान है।
प्यार से निर्वैर जीवन जी रहे,
स्नेह से टूटे दिलों को सी रहे।
सत्यमेव पुरम जिला बनने को है,
क्षेत्र का सौभाग्य अब खुलने को हैं।
आओ मेवाती फ़िज़ा को छोड़कर,
उड़ चलें दक्षिण दिशा के छोर पर।
नगर रेवाड़ी पुराना है मगर,
है जिला नूतन हमारे चित्र पर।
कुछ समय पहले महेन्द्रगढ़ जिला,
था रिवाड़ी सहित अति विस्तृत बड़ा।
अब रिवाड़ी बन गया जनपद नया,
शान में बेहतर, अधिक धन–संपदा।
जंक्शन है रेल का सबसे बड़ा,
व्यस्तता व्यवसाय में आगे खड़ा।
धारूहेड़ा कारखानों का नगर,
चार चाँद लगा रहा है शान पर।
नगर में व्यवसाय विविध प्रकार का,
बर्तनों के कारखानों की छटा।
नागरिक जीवन यहाँ अति व्यस्त है,
काम में, आराम में, सब मस्त हैं।
नगर दिल्ली से जुड़ा व्यवसाय है,
महानगरी सम सभी की आय है।
नगर है खुशहाल, सुंदर, शानदार,
सुव्यवस्थित साफ हैं गलियाँ बाजार।

इस जिले के वीर थे रण बांकुरे,
मुगल, ब्रिटिश राज्य पर भारी पड़े।
वीर हेमू इस नगर की आन था,
वीर भूमि की सुघड़ संतान था।
काँपता था मुगल शासन वीर से,
बोल छाती छेदते थे तीर से।
लड़ते लड़ते छिन्न मस्तक हो गया,
बीज आजादी के लेकिन बो गया।
यह नगर है राव तुलाराम का,
है कोई सानी नहीं इस नाम का।
जंगे आजादी में जूझा शान से,
दाँत खट्टे कर दिये शैतान के।
फौज अंग्रेजी थकी, लाचार थी,
वीर ने इस कदर मारामार की।
युगल तुलाराम, कृष्ण गोपाल ने,
पस्त कर डाले सभी के हौंसले।
यह उन्हीं वीरों का जन्म स्थान है,
जिनकी अंबर से भी ऊँची शान है।
धर्म का गो भक्ति का भी जोर है,
गो सदन, मन्दिर यहाँ सब ओर है।
आश्रम बेजोड़ भगवद् भक्ति का,
है खड़ा साखी बना शिव–शक्ति का।
वृक्ष ऊँचे दूर तक फैले हुए,
विहग–संकुल, धूम से मैले हुए।
अति भला है भक्ति का वातावरण,
सौम्य है निर्दोष है पर्यावरण।
शिव विराजें मध्य मोती चौक में,
ज्यों प्रकाशित विश्व, रवि–आलोक में।
कृष्ण युग में भी नगर खुशहाल था,
यह नगर बलभद्र की ससुराल था।
रेवती था नाम बल की वाम का,
है यही आधार इसके नाम का।
यादवों की बाग बाड़ी हो गया,
नाम नगरी का रिवाड़ी हो गया।

ठीक उत्तर में रिवाड़ी के समीप,
है जिला झज्जर कि जैसे दीप्तदीप।
है बहुत प्राचीन जनपद शानदार,
दे रहे साखी विखंडित दर–दिवार।
था कभी यह गढ़ नवाबी ठाठ का,
था प्रमुख आधार युद्ध विराट का।
अब यहाँ छविमान आर्य–समाज है,
और गुरूकुल का दिलों पर राज्य है।
संग्रहालय, में पुरातन की छटा,
देखने को सुलभ है इसमें सदा।
है यहाँ पर एक बड़ा अभिलेखागार,
है जहाँ उपलब्ध अद्‌भुत शाहकार।
रेत झज्जर की बहुत ही कारगर,
झज्जरें निर्माण करने का हुनर।
है बहुत विख्यात सारे देश में,
बिक रहे हैं फ्रिज स्वदेशी वेश में।
इस नगर के दक्षिणी–पश्चिम की ओर,
है सटा इससे महेन्द्रगढ़ का छोर।
ये है जनपद दक्षिणी भू भाग का,
केन्द्र है संतुष्टि का अनुराग का।
पूर्ववर्ती नाम से कानौड़ है,
वीरता, सत्संग में बेजोड़ है।
पास में बाधोत का शिवधाम है,
जिसका पौराणिक कथा में नाम है।
बाघ रहते थे यहाँ आनन्द से,
थे सुरक्षित अधिक अभयारण्य से।
लोकगीतों का रहा प्रचलन यहाँ,
आशु कवियों का अजब था सिलसिला।
आशु गायक लोक कवि थे नंदलाल,
छंद बख्तावर के करते थे कमाल।
अधर छंदों में समूचे गीत गा,
और होठों में लगा तिनका बड़ा।
भाव से परिपूर्ण रचना बोलकर,
गेय छंदों में बराबर तोलकर।

आशु कवि गाते अनूठे गीत थे,
शब्द मानों ताल सुर के मीत थे।
एक कविता और भाषाएँ अनेक,
गूँथकर अभिव्यक्ति को सस्वर, सटेक।
चकित कर देते थे श्रोता वर्ग को,
छवि लजाती थी यहाँ की स्वर्ग को।
सरल जीवन सद्विचारों में सनी,
थी महेन्दरगढ़ की अनुपम जिंदगी।
आज भी गोसदन, शिवमन्दिर, किला,
इस नगर की है अछूती संपदा।
आज भी सीधा सरल हर गाँव है,
सुलभ, पीपल, नीम की मृदु छाँव है।
नाम से है यह महेन्दरगढ़ जिला,
केन्द्र लेकिन नारनौल नगर बना।
आओ बढ़ते हैं तनिक दक्षिण की ओर,
है यहाँ से मील बाईस नारनौल।
है बड़ी प्राचीन नगरी नारनौल,
शीष पर माखन की गगरी नारनौल
जिंदगी सादा हँसी ठट्ठा भरी,
ज्यों सुहानी शीष पगरी नारनौल।
था यही च्यवन ऋषि का आश्रम,
स्नान से ऋषि को मिले यौवन, नयन।
जन्म स्थल है बीरबल का नारनौल,
जग विदित सम्राट से ठठ्ठा मखौल।
था यहीं सतनामियों का केन्द्र भी,
थी यहीं से क्रांति की ज्वाला उठी।
थे यहीं जन्में बहादुर शेरशाह,
काँपते जिनसे मुगल आलम पनाह।
उनके दादा का यही है मकबरा,
एक अद्भुत है नमूना शिल्प का।
है यहीं दरगाह हमजा पीर की,
आज भी शोहरत है संत फकीर की।
है यहीं दरगाहे पीरे तुर्कमान,
मान्यता जिनकी रही चिश्ती समान

देखने के योग्य है गुंबद मजार,
यह तालाबों का नगर है शानदार।
यह जिला है केन्द्र संत–समाज का,
केन्द्र है प्राचीन रीति–रिवाज का।
संत पाली के रहे जयराम दास,
सिद्धवाणी और अंतर में उजास।
ब्रह्मचारी संत रामेश्वर यहाँ,
सिद्धि के आगार थे, जाने जहाँ।
खोल में है स्थान भैरूनाथ का,
था जिन्हें सब ज्ञान ज्ञाताज्ञात का।
था प्रकट शिव रूप दिव्य ललाट था,
शुष्क बीहड़ में अनोखा ठाठ था।
नाधपंथी साधुओं के बादशाह,
गूँजता है नाम खेतानाथ का।
गर्म टीला रेत का, ठण्डी हवा,
संत खेतानाथ की ही थी दया।
हर तरफ मंदिर शिवाले है यहाँ,
हर सुबह हर शाम गूँजे घंटियाँ।
सातवें दिन गूंजता मानस का पाठ,
देखते ही बनता है भजनों का ठाठ।
योग की साकार प्रतिमा रामदेव,
पास में फटका नहीं धोखा फरेब।
योग–प्राणायाम के संयोग से,
मुक्ति दिलवाते हमें हर रोग से।
सृष्टि में हर जीव इनका मित्र है,
नयन में संवेदना का चित्र हैं।
यह अलीपुर ग्राम का उपहार है,
आज जो संसार का श्रृंगार है।
दीखने में है उपेक्षित यह जिला,
है नहीं व्यवसाय का साधन बड़ा।
ना कोई भारी यहाँ उद्योग है,
इसलिये अति शांत शीतल लोग हैं।
भाग्य का करके भरोसा मौन है,
मौन का लेकिन सहायक कौन है।

मध्य हरियाणा सजग अधिकार में,
इसलिये संपन्न है संसार में।
मानते हैं क्षेत्र यह निर्दोष है,
किन्तु उन्नति क्षेत्र में बेहोश है।
जो मिले रहता उसी में मस्त है,
शिष्ट है पर हौसलें में पस्त हैं।
देश के हित जूझते इसके जवान,
किंतु गौ की भांति बिल्कुल बेजुबान।
यह जिला उन्नत नहीं अति दीन है,
भजन–पूजन में तभी तो लीन है।
अब यहाँ के छात्र हैं कुछ सावधान,
दे रहे हर क्षेत्र में भरपूर ध्यान।
देखना है भाग्य के निर्माण में,
कौन बेहतर श्रमिक और भगवान में।
पास ही मोडाश्रम शिवधाम है,
स्थित जहाँ बावन फुटे भगवान है।
सामने बैठे हुए नंदी विशाल,
जानती पत्थर की प्रतिमा सब का हाल।
धन्य हूं मैं देखकर जीवंत रूप,
सौम्य, सुंदर, सुखद, वरदायक अनूप।
चाहता हूं अब यही मैं रात भर,
शांति का आनंद लूँ, विश्राम कर।

***

स्नान कर, दर्शन किये उत्साह से भगवान के,
अब चलूं वायव्य दिशि में हुक्म से श्रीमान के।
''तुम'' कहा मैंने, ''हमारी कल्पना के हंस हो,
हो नहीं बंधक हमारी आत्मा के अंश हो।
स्वस्थ हो स्वच्छंद हो, जीवंत हो मतिमान हो,
सूक्ष्म हो, निर्बंध हो, ध्वनि से अधिक गतिमान हो।
बस विहंगम दृश्य की अभिव्यक्ति हमको चाहिये,
देखकर हर दृश्य हमको भी बताते जाइए।
उड़ चला कल्पित विहंगम, हम प्रतीक्षा में रहे,
फिर भिवानी क्षेत्र के विवरण हमें मिलने लगे।

नगर सेठों का भिवानी, केन्द्र है व्यवसाय का,
बस यहाँ व्यापार ही है प्रमुख साधन आय का।
स्कूल, कालिज, हैं बहुत से, साथ शिक्षा बोर्ड है,
ज्ञान की विज्ञान की शिक्षा यहाँ बेजोड़ हैं।
राज्य कवि इस क्षेत्र के विख्यात थे श्री शंभुदास,
आशु कवि, विद्वान कर्मठ, कंठ वाणी का प्रकाश।
प्रखर थे विद्वान सीताराम विद्या–मार्तण्ड,
ब्रह्मचर्याश्रम भिवानी आज भी स्मारक अखंड।
हर तरह के रोग की समुचित चिकित्सा है यहाँ,
शांतिप्रिय, गरिमामयी, पूरी व्यवस्था है यहाँ।
अनुभवी, विख्यात, नेता इस जिले की देन हैं,
हो रही इसकी प्रगति, उत्साह से दिन रैन हैं।
साथ ही तोशाम नामक धर्म केन्द्रित ग्राम है,
सिद्ध मूंगीपा महोदय का यहाँ पर स्थान है।
शिष्य जिनके हैं हजारों आज भी इस देश में,
कर रहे सब का भला, बिन स्वार्थ के, हर वेश में।
धर्म नगरी नाम से विख्यात है सारा जिला,
मंदिरों, गुरूकुल, धर्मशालाओं का प्रिय सिलसिला।
हैं बहुत से कारखानें औ प्रशिक्षण केन्द्र भी,
देखकर सौंदर्य, नगरी का, चकित है इंद्र भी।
भव्य हुड्डा पार्क में रंगीन फव्वारें चलें,
शाम को बालक, बड़े, बूढ़े जहाँ आनन्द लें।
शिष्टता, शालीनता, सत्संगमय जीवन यहाँ,
सुमन–मंजूषा सरीखा नगर इस जैसा कहाँ।
चाहता है मन यहाँ कुछ देर फूलों सम हिलें,
मौज लें, शीतल हवा की, झूमकर आगे बढ़ें।

***

बिन दिशा बदले सुशोभित सामने जनपद हिसार,
प्रगति में, सौदर्य में, संक्षिप्त हरियाणे का सार।
लग रहा है देखकर, हर प्रगति की रफ्तार को,
राजधानी का यहीं, शायद सुखद विस्तार हो।
है प्रखंडों में विभाजित बस्तियाँ इस शहर की,
झलकियाँ चौड़ी सड़क की, विविध स्थितियाँ नगर की।

केन्द्र शिक्षण का, प्रशिक्षण का, कृषि विज्ञान का,
कर रहा पग–पग प्रमाणित स्तर नगर की शान का।
व्यस्त है इंसान प्रतिपल, फिर भी जीवन मस्त है,
वाटिका वन में भ्रमण के, लोग सब अभ्यस्त है।
हैं बहुत से ऐतिहासिक स्थल यहाँ शोभायमान,
मकबरा फीरोज तुगलक, महल गुजरी का महान।
विश्वविद्यालय यहाँ विख्यात कृषि विज्ञान का,
सेब और अंगूर के अनुपम, नए संधान का।
हर तरह के फूल, फल, विकसित नवीन प्रयोग से,
चकित है यह विश्व कुल, विज्ञान के संयोग से।
सामने फैला है मधुवन, वन्य पशु, खग, मृग, विहार,
अनगिनत पशु हैं सुरक्षित श्याम मृग, चीतल–लंगार।
केन्द्र है जनपद मधुर संगीत का, साहित्य का,
है अपरिमित काव्य प्रतिभा, रंग, पद–लालित्य का।
ग्राम अग्रोहा विगत इतिहास में विख्यात है,
अग्रवालों का सृजनथल, गर्व की यह बात हैं।
अग्रसेन दयालु नृपः व्यवहार में आदर्श थे,
नीति में निष्णात, थे आधार स्वस्थ विमर्श के।
आपसी सहयोग से था राज्य अग्रोहा बना,
एक रूपया ईंट से विस्तार जन–पद का हुआ।
सिद्ध होता है कि अपने देश की यह रीति है,
आपसी सहयोग में औ संगठन में जीत है।
प्रगति सुख संपन्नता पर, शत्रु को भाई नहीं,
इसलिये इस राज्य में चिर शांति रह पाई नहीं।
नष्ट गौरी ने किया इस राज्य के सम्मान को,
लूटकर सब ले गया सुख, शांति, धन–सामान को।
हो रहा निर्माण फिर से धाम अग्रोहा बना,
शीघ्र ही हो जाएगा, विस्तार पहले से बड़ा।
नाम हाँसी नगर का भी, देश में विख्यात है,
वीरता, उत्साह इस नगरी का सबको ज्ञात है।
जंगे आजादी में लोगों में बड़ा उत्साह था
मृत्यु से डरता न था, हर शख्स बेपरवाह था।
संत सूफी थे यहीं के नेकदिल बाबा फरीद,
जिनकी नजरों में भलाई, हाथ में सुख की कलीद।

है नगर प्राचीन हाँसी, आज भी सम्पन्न है,
कनक, निरमा, ईख चावल उपजता हर अन्न है।
लग रहे उद्योग, संबंधित उपज के वास्ते,
आ रही उन्नति यहाँ, सहकारिता के रास्ते।
भव्य फ्लैमिंगों सुखद, विश्राम गेह हिसार का,
दृश्य प्रस्तुत कर रहा है प्रकृति के श्रृंगार का।
कल तलक वापव्य दिशि में था प्रसार हिसार का,
आज वह जनपद फतेहाबाद जग जाहिर हुआ।
है फतेहाबाद भी हर भांति रूप हिसार का,
उपज, जलवायु, धरातल लोक जीवन एक सा।
भाखड़ा की मुख्य धारा छू रही इस खंड को,
और धग्गर भी दिखाती निज प्रवाह प्रचण्ड को।
धन्य ग्राम कुम्हारियाँ कल भाग्य को चमकाएगा,
अणु प्रवाहित ऊर्जा का क्षेत्र जब बन जाएगा।
जानवर, उद्योग, कृषि व्यापार सब कुछ एक सा,
नाम के अतिरिक्त इसमें हें नहीं कुछ भी नया।
रेल सुविधा से उपेक्षित है अभी सारा जिला,
रेलवे को छू रहा केवल यहाँ भट्टू कलां।
मुख्य सड़को से जुड़ा जनपद फतेहाबाद है,
महानगरों की खचाखच से जिला आजाद है।
प्रकृति का हर दृश्य मनहर, इस जिले की शान है,
देखने के योग्य इसमें ग्राम्य जीवन आम है।
लोक संस्कृति ही फतेहाबाद की तासीर है,
ग्राम्य जीवन की यहाँ सुंदर सुघड़ तस्वीर है।
पर्यटक विश्राम स्थल भी है फतेहाबाद में,
भव्यता विश्राम स्थल की, शेष रहती याद में।
अब बढ़े ईशान दिशि में जीन्द जनपद के लिये,
इस जिले में विगत और नवीन का संसृष्टि है।
जीन्द पहले एक राजा की निजी जागीर था,
राजधानी थी नृपति की स्वप्न की तस्वीर था।
बन गया अब जीन्द जनपद, अपनी आजादी के बाद,
नवलता भी दीखती है, सुखद है गतयुग की याद।
धार्मिक परिवेश में है तीर्थ पिंडारा यहां,
उत्तरी भारत में इसकी जग–विदित है मान्यता।

महर्षि जमदग्नि के तप, क्लेश का संगम यहाँ,
कामधेनु–सहस्त्रबाहु प्रसंग का कटु सिलसिला।
श्री परशुधर राम का इस क्षेत्र में विचरण हुआ,
क्रोध उनका क्षत्रियों की मृत्यु का कारण हुआ।
क्षेत्र यह संघर्ष का था, केन्द्र युद्धों का बड़ा,
आज भी अवशेष बनकर दुर्ग का खंडहर खड़ा।
बीच सरवर आज भी मन्दिर परम सुख धाम है,
नाम भूतेश्वर शिवालय, जींद की पहचान है।
जींद का प्रियलोक जीवन, मेल है रस रंग का,
धर्म संस्कृति का समागम, एक अपने ढ़ंग का।
पर्यटक विश्राम घर 'बुलबुल' सुखद, सुंदर यहाँ,
शांति सुख सौंदर्य का वातावरण जिसमें बना।
लोक भाषा मधुर है निर्दोष जीवन धार है,
जीन्द की जिन्दादिली से भिज्ञ कुल संसार है।
प्रेम का वातावरण हे, धर्म में विश्वास है,
सफल जीवन की कलीदें जींद ही के पास है।
शिल्प, कृषि उद्योग में व्यवसाय में सरनाम है,
जीन्द से पूछें कि सुख–संचार किसका नाम है।
काव्य में संगीत में, उत्साह में बेजोड़ है,
जीस्त का हर क्षेत्र निर्मल, प्रगतिमय हर मोड़ है।
ना कहीं पर ईर्ष्या है, ना कहीं प्रतिकार है,
प्रगति पथ पर शिखर चढ़ने के लिये तैयार है।
जीन्द से पश्चिम दिशा में डीग सीमा पार कर,
आ गए सिरसा जिले में, खुश हुए दीदार कर।
पंचनद उत्तर दिशा में और दक्षिण भाग में,
क्षेत्र राजस्थान का है अग्रणी अनुराग में।
मस्त भंगड़ा और गिद्दा, लोकप्रिय पंजाब का,
देस, धूमर, राग सोरठ मधुर गायन राज का।
बस इसी कारण यहाँ पर युगल संस्कृति का प्रवाह,
राजपूतानी इधर है उधर पंजाबी प्रभाव।
रेत के टीले मिलेंगे जिले के हर गांव में,
किंतु नहरी क्षेत्र की सुविधा भी है हर ठाँव में।
कनक, दालें, बाजरा, सरसों उपज हर खेत में,
सत्य है सोना उपजता, निपट बालू रेत में।

शांतिप्रिय है लोग, सच्चे धर्म में ईमान में,
हाथ मेहनत में लगे हैं, ध्यान है भगवान में।
बस इसी कारण यहाँ डेरे बहुत हैं साध के,
सत्य सिरसा में नहीं अड्डे कहीं अपराध के।
भव्य है डेरा यहाँ सरसाई नाथ फकीर का,
द्वार खुलता दर्शनों से खुशनुमां तकदीर का।
आश्रम भी क्षेत्र में है राधास्वामी पंथ का,
है सुलभ आठों पहर सत्संग करना संत का।
जैन मुनियों के यहाँ थानक बने हर शहर में,
ज्ञान मिलता है जहाँ सत्संग की हर लहर में।
सच्चा सौदा आश्रम मीलों तलक फैला हुआ,
है जुड़ा अद्‌भुत प्रसंगों से यहाँ का सिलसिला।
उपज, लघु उद्योग में सिरसा बहुत विख्यात है,
सत्य मानों यह रूपहली रेत में जलजात है।
जैन थानक में बना परिवेश चातुर्मास का,
अब यहीं आनन्द लेंगे मानसिक उल्लास का।

***

5. मानस परिक्रमा (सिंहावलोकन)

लो प्रणाम ! उद्देश्य आपका सफल हो गया,
कठिन काम था, मनोयोग से सरल हो गया।
परिक्रमा में जो भी देखा तुम्हें बताया,
संप्रेषण संयोग बहुत अपने काम आया।
कई दृश्य देखे, समझे, पर कह ना पाया,
उन्हीं अनुभवों को मैं मानस में भर लाया।
वचन सुने अनमोल, रंग देखे रस भीने,
तुरत प्रसारण कर न सका, था लिप्त खुशी में।
ईश्वर ने दी गिरा अनयन, नयन बिनु वाणी,
सूक्ष्म, गभीर, सरस स्थितियाँ है कठिन बतानी।
इसीलिये वो सभी सुखद, रसभीनी बातें,
बतलाने में मुझे लगेंगी अनगिन रातें।
कुछ कड़वे अनुभव हैं, दुर्घटनाएँ भी हैं,
मैंने सब की सब अन्त्स में भर रखी हैं।

"मन मानस के हंस! तुम्हारा अभिवादन है,
शिथिल अचंचल तन का तू अति चंचल मन है।
मनोयोग के स्पष्ट रूप! तुम पर बलिहारी,
मैं धरती की धूल, बने तुम गगन–बिहारी।
सत्य कहा है कवि ने मन जीता हम जीते,
मन हारा हम हारे, मन रीता हम रीते।
सिद्व कर दिया तुमने सूरदास के स्वर को,
बधिर सुने संगीत, उलांधे लंगड़ा गिरि को।
तन हो बेशक शिथिल किन्तु उत्साही मन हो,
मनोयोग से शुष्क धरा पर भी सावन हो।
तुमने वो कर दिया, न कर पाया मैं जिसको,
श्रेय सफलता का बोलो मैं दूँ किस किस को।
ईश्वर ने तन के मन्दिर में किया उजाला,
मदिर कल्पना ने मन में उत्साह उछाला।
काव्य कला ने मन–मानस से हंस निकाला,
छंदों ने स्वर दिया, भाव ने रस भर डाला।
जन्मभूमि के आकर्षण ने भाव जगाए,
परिक्रमा के मोती राहों में बिखराए।
उड़ा हंस पथ में बिखरे मोती चुग लाया,
कुछ बांटे, कुछ चुगे और झोली भर लाया।
आए हो तुम बहुत दूर से थके हुए हो,
अंबर से उतरे हो श्रम से झुके हुए हो।
अब जाओ विश्राम करो कल बामें होंगी,
दिन होंगे सुख भरे रसीली रातें होंगी।"

***

स्नान, ध्यान, भोजन विश्राम सभी कुछ करके,
मन हंसा से हमने बातें की जी भर के–
परिक्रमा के कुछ अनुभव संक्षिप्त सुनाओ,
हरियाणे के जीवन का आधार बताओ।
हंसा बोला, हरियाणा का जीवन क्या है,
विविध गुणों की एक मनोहर मंजूषा है।
कुछ विशेषताऐं इसकी पहले हम जानें,
उनके माध्यम से ही हम उसको पहचानें।
पशुधन, प्रेम, परिश्रम, पंचायत और पानी,
हरियाणे के जीवन की सर्वोच्च निशानी।

साहस सुख, सहयोग शांति का मिश्रण सुंदर,
कुछ भी अंतर नहीं कर्म, वाणी के अन्दर।
सामूहिक संगीत, लोक मानस को भाया,
कदम–कदम पर मिला मुझे उल्लास सवाया।
सीधा सादा जीवन दूध दही का खाना,
मुझे मिला पग पग हंसता गाता हरियाणा।
धन वैभव संपन्न धरा है इस प्रदेश की,
मन पर छाई है अब तक छवि विमल वेश की।
मैंने हरियाणे में देखा नहीं भिखारी,
जीवन सुख से भरा पल्लवित धरती सारी।।
यद्यपि 'तू' कहकर पुकारती अपने पी को,
किन्तु प्राण से भी प्यारा पति लगता जी को।
सास ससुर को भी 'तू' से संबोधित करती,
सादर झुकती, धूल पांव की सिर पर धरती।
'तू' में एकल भाव सदैव छुपा रहता है,
माँ को पुत्र, भगत ईश्वर को 'तू' कहता है।
एक प्रतिव्रत धर्म निभाती पत्नी प्यारी,
पति की आंखों में भी है केवल एक नारी।
मेहनत करके दोनों ही परिवार चलाते,
लंबी उम्र बिता देते हैं हंसते गाते।
बड़े बड़े परिवार करें एक संग गुजारा,
घर में ही हो जाता, झगड़ों का निपटारा।
चौपालों में बैठ प्रेम से पीते हुक्का,
बड़े प्रेम से करते हैं सब हाँसी ठठ्ठा।
झगड़ों का पंचायत कर देती, निपटारा,
हर फरीक संतुष्ट भले जीता या हारा।
विश्वासी है, सबको अपने जैसा जानें,
कभी न करते झुठे वायदे और बहानें।
देश, धर्म, भगवान, सत्य में निष्ठा भारी,
देव तुल्य है हरियाणे के नर और नारी।
हर हालत में सुखी और संतोषी रहते,
हंसकर जीते, अपना दुखड़ा कभी न कहते।
देशभक्ति में हरियाणा का वीर अटल है,
उसका साहस देख डरे दुश्मन का दल है।

हरियाणे का कृषक खेत में मेहनत करता,
इसका वीर जवान, देश हित हंसकर मरता।
जनसाधारण हरियाणे का मेहनतकश है,
अनुकूलन में कुशल, न रहता कभी विवश है।
हर मेहनत का काम लगन से वह करता है,
विषम परिस्थितियों से कभी नहीं डरता है।
दिन भर श्रम करते करते जब थक जाता है,
चौपालों में हंस गाकर मन बहलाता है।
भजनी, साँगी और महाशय खुले मंच पर
करते धर्म प्रचार, खेलते नुक्कड नाटक।
गाँव–गाँव में सभी मनोरंजन करते हैं,
जीवन को सुख से जीते, सुख से भरते हैं।
छाछ राबड़ी दही, खीचड़ा इनका भोजन,
दाल चूरमें के सम्मुख फीके सब व्यंजन।
खेल कबड्डी, कुश्ती लड़ मन बहलाते हैं,
गांवों के नवयुवक विदेशों तक जाते हैं।
मेहनत करके लोग यहाँ हंसते गाते हैं,
सांगों, खेलों, कुश्ती से सुख सरसाते हैं।
इन खेलों में बालक कौशल दिखलाते हैं,
कभी कभी तो ये विदेश तक भी जाते हैं।
जीत बाक्सिंग वियतनाम से कल ही लौटे,
बड़े खेल दिखलाते बालक छोटे छोटे।
तन सुड़ौल, संवेदनशील हृदय वाले हैं,
हरियाणे के लोग बहुत हिम्मत वाले हैं।
त्यौहारों पर बड़े–बड़े लगते हैं मेले,
मेलों से सुख बढ़े, रहें सब दूर झमेले।
शहरों में नवयुग के सब साधन होते हैं,
पार्क, झील, बाजार, बाग, झरने, सोते हैं।
सैर सपाटे, दौड़, जंप, खेलों का संगम,
हरियाणे में बीते हँसते गाते जीवन।
इस प्रदेश की महिलाएँ घर की शोभा हैं,
निष्कलंक नैसर्गिक, इनकी सुन्दरता है।
घूंघट में अद्‌भुत, अनगढ़ सौदर्य बसा है,
जैसे सावन की बदली में चाँद छुपा है।

हंसती है जैसे बेले के फूल खिल रहे,
गीतों में धरती अंबर के छोर मिल रहे।
यौवन और सौंदर्य स्वस्थ तन पर छाया है,
ज्यों उपवन में बांसती मौसम आया है।
ढूंढ रहे सौंदर्य लोग निर्लज्ज विधा से,
है अनभिज्ञ जमाना, अनुपम दिव्य छटा से।
अर्धनग्न उन बालाओं में रूप कहां है,
जितने घूंघट खोलों उतने चाँद यहां है।
रूप नहीं है गलियारों में, बाजारों में,
रूप छुपा बैठा है घर की दीवारों में।
हरियाणे में रूप प्रेम के साथ मिलेगा,
भाग्यवान जीवन में यह दिन रात मिलेगा।
शीतलता नारी की जैसे चाँद सलौना,
सुंदरता नारी की जैसे जादू टोना।
नारी का निर्दोष प्रेम सम्बल जीवन का,
नारी का आकर्षण, सुख है व्याकुल मन का।
सुंदरता की सीमा हरियाणे की नारी,
किंतु शौर्य में साहस में जगती चिंगारी।
घर के कामकाज में अक्सर समय बिताती,
सहयोगिन की भांति पुरूष का हाथ बँटाती।
सुता, बहिन, माँ, पत्नी के रूपों में नारी,
ममता की मूरत लगती है प्यारी–प्यारी।
नवयुग में नारी शिक्षा का संबल पाकर,
चमक रही वह सभी क्षेत्र में आगे बढ़कर।
हरियाणे के गाँवों में, नगरों में नारी,
स्नेहिल, सरल, सुशील, नहीं फैशन की मारी।
त्यौहारों पर जब ऊँचे स्वर में गाती है,
खिल जाता परिवेश, प्रेम–रस बरसाती है।
उनके गीतों में अनगिन संदेश छुपे हैं,
जिनसे रसमय मंगलमय परिवेश हुए हैं।
मैं उन्मुक्त विहंग सभी कुल लख सकता हूं,
भला बुरा सब अच्छी तरह परख सकता हूं।
भारत की प्राचीन प्रथाएँ अजर अमर हैं,
हरियाणे में इन सबका भरपूर असर है।

गीतों से परिपूर्ण यहाँ की सभी प्रथाएँ,
हर अवसर पर गीत यहाँ अमृत बरसाएँ।
पुत्र जन्म, शादी–विवाह, पूजा के अवसर,
चलें बधाई गीत, बिहाई, जकड़ी, सोहर।
सास, ससुर देवर, जेठा, नंदी को लेकर,
गाए जाते गीत मधुर, सुखदायक, मनहर।
सेहरा, घोड़ी, विदा, सीठने, सरस स्वरों में,
गूँजा करते हर अवसर पर सभी घरों में।
देवी, देव, शीतला, भैरूं सभी मनाते,
भजनों में सबको गा गाकर न्यौत बुलाते।
खेल–कूद, व्यवहार, सभी गीतों में गाएं,
हर उत्सव की प्रथा, गीत में बांध सुनाएँ।
सच पूछो तो पुरूष ताल है, स्वर है नारी,
घर को, गीत बना देते, सुंदर फुलवारी।
पति–परायणा रही सदा भारत की नारी,
यहाँ विवाहित जीवन की अति लंबी पारी।
पश्चिम में कच्चे धागे सी मैरिज लाइफ,
टूट न जाए, आशंकित हसबैंड और वाइफ।
बिन झटके यदि युगल बरस पच्चीस बिताते,
बड़े चाव से सिल्वर जुबली लोग मनाते।
भारत में शादी है जन्म–जन्म का बंधन,
यह अटूट अक्षुण्ण, अजर, प्राणिक, अवगुंठन।
इसीलिये हरियाणे का जीवन सुखदायी,
हैं निश्चिंत समर्पित, युग–युग लोग–लुगाई।
हर त्यौहार यहां आते हैं हंसते–गाते,
जाते–जाते झोली भर खुशियां दे जाते।
मैंने परिक्रमा में पूरा बरस बिताया,
सब कुछ देखा, समझा, थोड़ा तुम्हें सुनाया।
हर त्यौहार यहां के मैंने स्वय मनाए,
सुने गीत हर मौसम के, मन को अति भाए।
सब कुछ उड़ते–उड़ते कहना सरल नहीं था,
था आनंद विभोर, अकिंचन, विकल नहीं था।
धन्यवाद, तुमने मुझको उन्मुक्त किया था,
इसीलिये मैने हर रस सानंद पिया था।

हरियाणा की भूमि, धरा त्यौहारों वाली,
बाहर–भीतर सभी जगह व्यापक हरियाली।
एक सास ने कहा, बहू तू चरखा कात ले,
बहू सुनाने लगी कथा, चर्खे की बात ले।
कैसे कातूं चरखा कोई तिथि नहीं खाली,
तिथियाँ सारी की सारी हैं त्यौहारों वाली।
पड़वा नव संवत्सर है, काता न जाय चरखा,
भैया दूज, तृतीया अक्षय, चौथ हुई करवा।
नाग पंचमी छठी चांदनी, फिर सीली सातैं,
दुर्गाष्टमी, दुर्गा नोमी चर्खा नहीं चलै।
बहुत बड़ा त्यौहार दशहरा, निर्जल एकादशी,
औध द्वाद्वसी, धन तेरस, सब तिथियाँ रूकी हुई।
अनंत चौदस, शरद् पूर्णिमा, मावस दीवाली,
कैसे काते चरखा मित्ती नहीं कोई खाली।
सत्य बात, अपने भारत में दिन त्यौहारों के,
जीवन की धरती पर खुशियों के फव्वारों से।
आते हैं खुशियां लेकर, नवरस संचार लिये,
दे जाते संदेश ''प्यार मिलता है प्यार दिए।''
भारत के ऋषियों ने की रचना त्यौहारों की,
मन में उठती रहे गूँज खुशियों के तारों की।
निर्धन, निर्बल सभी लोग त्यौहार मनाते हैं,
अच्छे कपड़े पहन, रसीला भोजन खाते हैं।
भारत की संस्कृति है त्यौहारों, मेलों वाली,
गीत–नृत्य–संगीत, नहीं कुछ खुशियों से खाली।
भारतवासी कटु अभाव में भी हँसता रहता,
झोपड़ियों में भी कुटुंब सुख से बसता रहता।
परिक्रमा के बीच निहारा मैंने हर मेला,
लगा मुझे भी बहुत रंगीला, खुशियों का रेला।
होली का त्यौहार मनाया हमने होडल में,
है प्रसिद्ध बंचारी का मेला ब्रजमंडल में।
चौपालों की छते, रंग के सरवर बन जाती,
खंबों से फव्वारे छूटे, नदियाँ बह जाती।
कारे की चौफइयों का हमने आनंद लिया,
पेड़े खाए और नगाड़ों का नवरंग लिया।

गुड़गांवा में नौ दिन तक की देवी की पूजा,
नवरात्रों में इससे अच्छा पुण्य नहीं दूजा।
पंचकुला में वैशाखी का पर्व मनाया था,
भंगड़ा, गिद्धा पाने में आनन्द सवाया था।
देखी अक्षय तीज जींद जमदग्नि आश्रम में,
परशुराम का जन्म महोत्सव लखा इसी क्रम में।
बट सावित्री पर्व बड़ा है महिला मंडल में,
सावित्री की कथा सुने मिल बट के आंचल में।
एकादशी निर्जला हमने देखी कैथल में,
जल–फल दान दिया जाता है व्रत अनुशीलन में।
कदम–कदम पर शर्बत की प्याऊ लग जाती हैं,
पुण्य कर्म की इच्छा हर दिल में जग जाती है।
श्री गुरू अर्जुन देव पर्व देखा अंबाले में,
शबद सुना, लंगर छकिया, हमने गुरूद्वारे में।
जब आई आषाड़ी पूनम, उड़कर खोल गया,
श्री गुरू भैरूनाथ धाम में, पूजन भजन किया।
श्रावण शुक्ला तीज, तीज हरियाली होती है,
हरी भरी फूलों वाली हर डाली होती है।
नारनौल में मैंने झूलों की बहार देखी,
गीत सुने सावन के, रिमझिम की फुँहार देखी।
रक्षाबंधन पर अपनी, बहिना के द्वार गए,
उसने राखी बांधी हमने प्रिय उपहार दिए।
पर्व प्रेम का रक्षाबंधन, बहुत पुराना है,
हर हिन्दू ने इस दिन की महिमा को जाना है।
सूर्य चन्द्रमा ग्रहण देखने कुरूक्षेत्र आए,
किए श्याम के दर्शन, ब्रह्म सरोवर में न्हाए।
जगाधरी में जन्म अष्टमी, हमें रास आई,
जमना जी में किया स्नान, छवि मोहन की पाई।
गोगा नौमी का पूजन देखा रेवाड़ी में,
पीले वसन पहन जाते जन गोगा मैड़ी में।
नौ दिन तक आनंद लिया था शहर भिवानी में,
नवदुर्गा के पाठ किए धर ध्यान भवानी में।
विजय पर्व दशहरा मनाने हम हाँसी आए,
देखी हमने वहाँ राम की सुंदर लीलाएँ।

हांसी की झांकियां, लाग वाली कहलाती है,
लगती बहुत अजीब सभी के मन को भाती हैं।
दीवाली सोनीपत की मतवाली होती है,
रंग–बिरंगे झिलमिल दीपों वाली होती है।
घर–घर श्री लक्ष्मी गणेश का पूजन होता है,
सोना–चांदी से धन का संवर्द्धन होता है।
गोवर्द्धन पूजा के दिन मित्रों को संग लिये,
होडल से परकम्मा देने हम गिरिराज गए।
भैया दूज दिवस आया तो याद बहन आई,
हर बहना को बहना समझा, भाई को भाई।
देखा हमने बहिन बलैयां लेती भाई की,
पूजा करती–करती है ज्यौनार मिठाई की।
भारत में ही निभता रिश्ता भाई बहनों का,
दुर्लभ है अन्यत्र, हुआ संसार बेगानों का।
श्री गुरू नानक देव पर्व पर पानीपत आया,
नगर कीर्तन, ग्रंथ पाठ सुन, गुरू प्रसाद पाया।
आया जब रमजान, ताजियों पर मेवात गया,
ईद मुबारक कहा सभी से, सब से गले मिला।
लोहड़ी औ संक्राति मनाई हमने रोहतक की,
खीर, चूरमा, गजक रेवड़ी खाई स्वाद भरी।
जब बसंत का मौसम आया, सरसों गदराई,
मुझको भी इस ऋतु में अपने घर की याद आई।
अपने त्यौहारों की महिमा बहुत निराली है,
सूखे जीवन में भी यह लाती हरियाली है।
खुशियों का मौसम रहता है पूरे बरस यहाँ,
ऐसा सुखद सुयोग बताओ जग मे और कहाँ ?

***

6. अग्रावलोकन

मैंने देखा त्यौहारों में,
मानस का हंसा मस्त हुआ।

उसका चिंतन, उसका वर्णन,
तल्लीन भाव से ग्रस्त हुआ।
मैंने उसको संबोधित कर,
अन्तश्चेतन झकझोर दिया।
जैसे सरिता ने उछल उछल,
बढ़ते बढ़ते नव मोड़ लिया।
मैंने संबोधिक किया – ''हंस तुम,
जितने अनुभव लाए हो,
उनके बल पर यह निश्चित है
तुम इस प्रदेश पर छाए हो।
तुम यह भी बतला सकते हो,
इसका भविष्य कैसा होगा,
है वर्तमान खुशरंग यहाँ,
क्या कल इससे अच्छा होगा।''
हंसा बोला, '' मैंने जो कुछ,
इस एक बरस में देखा है।
जो पढ़ा, सुना है, समझा है,
उन सबका ही यह लेखा है।
हरियाणे की नव सत्ता का,
अभिनव प्रयास यह कहता है।
सचमुच भविष्य उजला होगा,
यदि शासक सक्रिय रहता है।
जिस गति से बनी योजनाएँ
ऐसे ही यदि गतिमान रहें।
हरियाणा कल स्वर्णिम होगा,
यदि संयोजक मतिमान रहे।
झज्जर में, तीन विरामों में,
प्रविशेष क्षेत्र बस जाएगा।
पच्चीस हजार एकड़ भू पर,
बस स्वर्ग लोक बन जाएगा।
औद्योगिक, कृषि व्यापार और,
शिक्षा, मन–रंजन क्षेत्र सभी।
सक्रिय होंगे जब एक जगह,
होगी अनगिन क्षमता तब ही।

साठ करोड़ की लागत से,
शैक्षिक विकास हो जाएगा।
तकनीकी शिक्षा का विवरण,
कम्प्यूटर पर मिल जाएगा।
निश्चित ही तकनीकी शिक्षा,
विकसित होगी, फलप्रद होगी।
जब वैश्विक सभी जानकारी,
कम्प्यूटर बीच सुलभ होगी।
अध्ययन किया, यह समाचार भी,
खुद मैंनें, अखबारों में,
स्पेशल इकोनॉमिक ज़ोन हेतु,
सहयोगी खड़े कतारों में।
जब रूपया लाख–करोड़ यहाँ,
कंपनियाँ नकद लगाएँगी।
कितना जगमग होगा प्रदेश,
कितनी शोभा बढ़ जाएगी।
मैट्रो कैमिकल हब होगा,
जब पानीपत के आंचल में।
होगी वैज्ञानिक प्रगति यहाँ,
शौहरत विस्तार दिंगचल में।
अठाइस नगरों में विकास,
होगा, यह मैं कह सकता हूं।
''मंजिल राही को ही मिलती'',
क्या कहे बिना रह सकता हूं ?
प्योरो फाइड एसिड प्लांट,
पानीपत में आरम्भ हुआ।
मोबिल, डीजल, पैट्रोल क्षेत्र में,
हरियाणा एक स्तंभ हुआ।
जब तीस हजार करोड़ रूपये से,
यह प्लांट चालू होगा।
हरियाणे का सौभाग्य देख,
तब कौन न ईर्ष्यालु होगा ?
संचार, सूचना, कल पुर्जे,
मोटर, विद्युत उपकरणों में।

धन लगे बयालिस सौ करोड़,
होगा विकास कुछ चरणों में।
लघु उद्योगों की उन्नति में,
अब हरियाणे की रूचि होगी।
फिर नगर–नगर और गांव–गांव में,
क्यों न तीव्र उन्नति होगी।
गुड़गांव शीघ्र विकसित होकर,
जब साइबर सिटी कहाएगा।
सचमुच हरियाणे का मस्तक,
जग में ऊँचा हो जाएगा।
मारूति निर्मिति का नया प्लांट,
मानेसर में लग जाएगा।
हरियाणा कार बनाने में,
तब नंबर वन कहलाएगा।
शिक्षा, औषधि, जल, खाद्य सभी,
है प्रगति क्षेत्र के धेरे में,
लगता है अब हरियाणे में,
उन्नति निश्चित चौफेरे में।
लेकिन सुख साधन का विकास,
आधा विकास कहलाता है।
जन के आचार विचारों से,
उन्नति का गहरा नाता है।
जिसके वासी व्यवहार–कुशल,
शालीन, सदाचारी होंगे।
जिसमें निर्दोष, कलंक हीन,
सब घंधे सरकारी होंगे।
बस वही क्षेत्र उन्नति के पथ पर,
चरम शिखर तक जाएगा।
साधन और सदाचार पाकर,
वह पूर्णोन्नत कहलाएगा।
सोने की लंका सभी तरह,
साधन–सम्पन्न कहाती थी।
देवों पर आधिपत्य पाकर,
उभरी रावण की छाती थी।

बोलों, उस नगरी का वैभव,
क्यों बजरंगी ने जला दिया।
आचरणहीन नृप की सत्ता को,
जला दिया तो भला किया।
आचार सुरक्षा सर्वप्रथम,
कर्तव्य हमारा होता है।
घी–बाती भरे दिए में कब,
बिन ज्योति उजाला होता है।
हत्या घोटाले, लूटपाट,
सत्ता में हो या जनता में।
व्यवधान बनेंगे उन्नति में,
अवरोध बनेंगे समता में।
अपराधी को यदि दण्ड न हो,
यदि न्याय लचीला हो जाए।
ऐसे में निश्चित है, गति का,
अवगुंठन ढीला हो जाए।
हरियाणे में भी पैसे हित,
हत्याएं होती देखी हैं।
ललनाएँ विधवा हो जाती,
संतानें रोती देखी हैं।
धन संपद का संचय करते,
वो नेता भी मिल जाते हैं।
जो अपने जनहित चिंतन के,
ऊँचे चढ़ ढोल बजाते हैं।
उन्नति की खातिर लोगों को,
दिल भी उन्नत करने होंगे।
व्यवहार–कुशलता, सद्विचार,
निर्मल मन में भरने होंगे।
धन की चाहत ने संस्कृति में,
ऐसा परिवर्तन कर डाला।
हो गया आदमी हत्यारा,
करता निशदिन गड़बड़ झाला।
अपने थोड़े से लाभ हेतु,
वह अहित सभी का करता है।

हो उसे लाभ, परवाह नहीं,
मर जाए देश यदि मरता है।
कल जींद क्षेत्र में लोगों ने,
पटवारी की हत्या कर दी।
इसलिए कि उसने रकबे की,
स्थिति सत्य रजिस्टर में भर दी।
कुछ धन केन्द्रित व्यवहार हुआ,
कुछ ललक बढ़ाई टी0वी0 नें,
अपहरण बढ़े, व्यभिचार बढ़ा।
सीखे कुकर्म नव पीढ़ी ने,
वासना ग्रस्त कुछ लड़कों नें,
कोचिंग के बाद भिवानी में।
डाला तिजाब कन्याओं पर,
यों कालिख भरी जवानी में,
केवल विरोध की खातिर ही,
कुछ लोग विरोधी होते हैं।
शुभ कर्म विपक्षी के लखकर,
शत कंटक पथ में बोते हैं।
टी0वी0, पैसा, विद्वेष, नशा,
सब युग–विनाश के कारण हैं,
इनको विकास की संज्ञा दें,
युग करता इनको धारण है।
इनसे विमुक्त रहकर जो भी,
उन्नति विकास हम करते हैं।
प्रतिभा का शुद्ध प्रदर्शन है,
हम युग संवर्द्धन करते हैं।
जिनके मन में उत्साह भरा,
जिनके हाथों में कौशल हैं
वो हरियाणे के गौरव हैं।
निर्बाध प्रगति के संबल हैं।
हिन्दुस्तानी मस्तिष्क कभी जब,
सक्रिय चिंतन करता है,
कौतुहल कर दिखलाता है,
जग को अचरज से भरता है।

करनाल क्षेत्र में विजय सेतिया ने,
थोड़ी सी लागत में।
देशी फ्रिज निर्मित कर डाला,
कुछ कमी नहीं अभ्यागत में।
पैंतालिस डिग्री तापमान में,
वह पंद्रह दिखलाता है,
उसमें सब्जी, फल, दूध सभी,
एक मास सुरक्षित पाता है।
अब कुरूक्षेत्र के गुरूकुल में,
जनरेटर बैल चलाते हैं।
दो सौ फुट की गहराई से,
जल खींच धरा पर लाते हैं।
केवल दो धंटे के श्रम से,
बिजली उपजाई जाती है।
छै घंटे छः पंखे चलते,
छः ट्यूब जलाई जाती है।
सस्ते उपलब्ध साधनों से,
जब अच्छा परिवर्तन होगा।
धनवान बने निर्धन किसान,
ट्रैक्टर समान गोधन होगा।
नवसत्ता के संयोजन सब,
उज्ज्वल भविष्य के साधक है।
पर राजनीति की दलबंदी,
पग–पग उन्नति में बाधक है।

***

7. प्रबोधन

देख लो हे हंस, तुम भी भाव विह्वल हो गए,
देखकर हालत विलक्षण, पस्त तुम भी हो गए।
योजनाएँ सिद्ध करती, प्रगति होवेगी जरूर,
किन्तु स्थितियाँ कह रही, दिल्ली अभी है बहुत दूर।
मात्र सुख साधन बढ़ाना, प्रगति कहलाती नहीं,
है अंधेरी राह जब तक रोशनी आती नहीं।

दूर होता जा रहा है आदमी निजधर्म में,
वास्ता उसको नहीं अब, शिष्टता, शुभ कर्म से।
तुम अतुल क्षमता लिए, इतने समय उड़ते रहे हो,
विगत कल से, आज से, कल से सतत जुड़ते रहे हो।
जानते हो खूबियाँ भी और कमियाँ भी हमारी,
सब तरह सम्पूर्ण हे, सब मानसिक निधियाँ तुम्हारी।
तुम सभी को आचरण का, सरल, शुभ मारग दिखा दो,
क्या करें हम क्या नहीं, संक्षेप से हमको बता दो।
चाहते हम भी यही हैं कल बने उज्ज्वल हमारा,
किन्तु कुछ दिग्भ्रांतियां गंदला रही परिवेश सारा।
है परम कर्तव्य कवि, शिव भाव से कविता बनाए,
गंदगी मन की हटाकर, प्रगति का मारग दिखाए।
देश को जब हर तरफ घेरे खड़ी है आपदाएँ,
यह नहीं कर्तव्य कवि का, चुटकलों से धन कमाए।
काव्य फर्माइश नहीं है, यह नहीं हंसना हंसाना,
काव्य का कर्तव्य है, दिग्भ्रांत को सत्पथ दिखाना।
काव्य ही यदि स्वार्थ हित, उपहास की बातें करेगा,
कौन फिर तुम ही कहो, नव ज्योति जन जन में भरेगा ?
है यही अनुरोध तुम, अब चेतना मन में जगा दो,
कुटिलता, जडता मिटे, शालीनता, शुचिता सिखा दो।
यात्रा में जब कहीं पर, ठहरकर कुछ दिन बिताए,
दिव्य जीवन से हुआ सत्संग, कुछ संकेत पाए।
उन सभी को स्मरण करके, आज कुछ कहने चला हूं,
हो भला सबका, प्रगति हो, यही मैं भी चाहता हूं।
अपना हरियाणा सभी का, ताज है, सब जानते हैं,
योजनाएँ ही प्रगति का, राज है सब मानते हैं।
किन्तु इनके साथ नैतिक बल, हमारा है जरूरी,
प्रगति और प्रयास में, होवे न किंचिन्मात्र दूरी।
इसलिए सद्भावना के साथ, मानस खोलता हूं,
ध्यान से सुनिए सभी, संक्षेप में कुछ बोलता हूं।
''सबसे पहले जिन्दगी में, आस्तिकता चाहिए,
प्राप्त कर उसकी दया, जीवन समर्थ बनाइए।
देश, गुरू, माता–पिता, कुल देव में हो आस्था,
जिनके कारण, सुखमयी, सुंदर, मनुज का तन मिला।

मन, वचन, व्यवहार में, समभाव होना चाहिए,
हम करें सबका भला, यह चाव होना चाहिए।
प्रिय हमें संस्कृति हमारी, अपने जीवन प्राण से,
सुदृढ़ हो संबंध अपना, प्यारे हिन्दुस्तान से।
देश का सौंदर्य धूमिल, हो न अपने काम से,
शुद्ध हो पर्यावरण, खग मृग रहे आराम से।
सत्य का सम्मान, अनुशीलन, समर्थन हम करें,
सत्य कहने से न चूकें, ना किसी भय से डरे।
काम से आंके, सभी को, नाम से बल से नहीं,
काम की, गुण की प्रशंसा, उचित होती सब कहीं।
वह बुरा है तो बुरा है, वह भला है तो भला,
देखते ही सोच लेना, कार्य अनुचित सर्वथा।
पूर्व आग्रह से किसी को आंकना, अच्छा नहीं,
मींच कर आंखे हृदय में, झांकना अच्छा नहीं।
स्वाभिमानी हम बनें, निज कर्म पर विश्वास हो,
हम कभी जीवन न काटें, दुर्गुणों के दास हों।
मुफ्त में अमृत मिले तो, गर्व से ठुकराइए,
रोटियाँ सूखी मिले श्रम से, तो हंसकर खाइए।
ध्यान देने योग्य है एक, वार्ता जापान की,
बात छोटी सी है लेकिन, है बड़े ही काम की।
रेल में थी भीड़ हर, डब्बा खचाखच था भरा,
किन्तु बीचों बीच उसमें, एक डब्बा रिक्त था।
रिक्त बोगी में फकत, बैठा हुआ था पुरूष एक,
सब निकल जाते थे आगे, उस पुरूष को देख देख।
एक सज्जन देखकर, यह माजरा हैरान थे,
कौन था वह व्यक्ति जिससे, दूर सब इंसान थे ?
बोगियाँ उस रेल की थी, एक दर्जे की सभी,
फिर यहाँ पर क्यों नहीं, आता था कोई आदमी।
बात पूछी तो उसे यह, गार्ड ने उत्तर दिया,
जो वहाँ बैठा था उसके, पास में भाड़ा न था।
था वो आरक्षित महज, मोहताज लोगों के लिए,
इसी कारण सभी उस, कंपार्ट में आते न थे।
हो सदा व्यवहार ऐसा ही, हमारे देश में,
ना कोई मृगराज बैठे, बकरियों के वेष में।

मुफ्त की सुविधा न माँगें, सर उठाकर शान से,
हम कभी काटें न कन्नी, काम से, ईमान से।
समय का अंकुश रहे, हर योजना पर, काम पर,
स्पष्ट हो नियमित व्यवस्था, काम पर परिणाम पर।
देशहित, कर्तव्य पर, निशदिन हमारा ध्यान हो,
देश रक्षा में प्रथम, बलिदान जीवन प्राण हों।
अब करें कुछ बात उनकी, देश जिनके हाथ में,
देश की सरकार भी, जनहित करें हर बात में।
देश की रक्षा, सदा सरकार का, कर्तव्य है,
दुश्मनों की मित्र की, पहचान भी ज्ञातव्य है।
शत्रु भी होते हैं अकसर, दोस्तों के वेष में।
चूसते है खून अविरल, साथ रह एक देश में।
शत्रु हैं इस देश के कुछ, देश सीमा पार के,
हैं सबब धुसपैंठ के, आधार मारामार के।
बात करते मित्रवत्, पर शत्रुवत् व्यवहार है,
देखना है देश अपना, हर तरह तैयार है।
देश–रक्षा–हित हमारा, प्रांत भी तैयार हो,
देश की खातिर सदा, अपने हृदय में प्यार हो।
हर व्यवस्था सुदृढ़ हो, जनता रहे सुख चैन से,
पारदर्शी हो प्रशासन, मन, करम से, बैन से।
हर तरह सम्पन्न हो, सब साधनों से युक्त हों,
लोग सब सोंचे, करें, हर काम भय से मुक्त हो।
योजनाएँ ध्यान से, सद्बुद्धि से तैयार हों,
यत्न भी उपलब्धियाँ भी योजना अनुसार हों।
बोझ करजे का कहीं बढ़ जाए ना इस देश पर,
कर्ज लाता है गुलामी, व्यक्ति पर, परिवेश पर।
बंट रहा गणतंत्र अपना जाति के आधार पर,
पहुंचते नेता सभी अधिसंख्य जन के द्वार पर।
लोग मत लेते हैं केवल जातियों के नाम पर,
है यही धब्बा हमारे देश हिन्दुस्तान पर।
जातिगत व्यवहार होगा जब किसी भी देश में,
न्याय खाएगा झकोले, शिथिलता परिवेश में।
बांट कर सत्ता चलाना, है बहुत आसान पर,
प्रश्न उठते हैं सदा, उपलब्धि पर ईमान पर।

नीतिगत आधार पर गणतंत्र चलना चाहिए,
लाभ हर उपलब्धि का सर्वत्र मिलना चाहिए।
जातिगत व्यवहार, चिंतन, राष्ट्र का अपमान है,
है वही सत्ता सफल, रखती जो इसका ध्यान हैं।
एक को सब कुछ मिले और दूसरे को कुछ नहीं,
इस तरह की प्रगति अच्छे देश में होती नहीं।
ज्ञान, गुण, प्रतिभा, कला, स्तर की अपेक्षा शाप है,
यह सरासर वंचना अन्याय, अक्षय पाप है।
कुछ करें ऐसा कि पिछड़ा पन हटे इस देश का,
लाभ अनुचित ले न कोई जाति का, परिवेश का।
राष्ट्रहित हो लक्ष्य सब का, नीति में, व्यवहार में,
''देश पहले शेंष पीछे'' गूंज हो हर तार में।
नीति में ईमानदारी, पारदर्शी काम हों,
विश्व के नीले गगन में, राष्ट्र–शशि छविमान हो।
न्याय में देरी न हो, ना ही लचीलापन रहे,
हो किया अपराध जिसने, दण्ड उसको ही मिले।
जन सुरक्षित, धन सुरक्षित, शांति हर समुदाय में,
प्रगतिहित हो व्यय हमारा, वृद्धि हो नित आय में।
हो सभी सुविधा सुलभ, जनता सुखी निश्चिंत हों,
आपसी विद्वेष, कटुता, ईर्ष्या का अंत हो।
प्रांत हो या देश, जन–सत्ता–समन्वय चाहिए,
आत्म निर्भर देश हो हर व्यक्ति निर्भय चाहिए।
प्रेम का वातावरण हो, स्वस्थ हो आलोचना,
तीव्रगति उपलब्धियों में, हो सफल हर योजना।
जो सुना मैंने कहीं भी, और देखा ध्यान से,
कह दिया बेबाक हो आदेश ले भगवान से।
चाहता हूं प्रार्थना कुछ अब करूँ भगवान से,
हो सुखी, सम्पन्न हरियाणा, वचन, मन, काम से।
मग्न मानस हंस था, मैंने कहा सद्भाव से,
सुख सुलभ होगा सभी को आपके अनुभाव से।

***

8. स्वस्तिकथन

जयतु जयतु, जय जय हरियाणा,
अंबर में झंकृत हो निशदिन,
वीर भूमि का अमर तराना।

शस्य, शामला, भूतल तेरा,
रात रूपहली, स्वर्ण सवेरा,
तन मन को शीतल कर देता,
तरूओं का खिल खिल लहराना।

जन जन का मन प्रेम–सदन है,
धर घर मथुरा वृंदावन है,
चुंदड़ी–दामन में लिपटा है,
यौवन का मधुमास सुहाना।

हंसते सोते हंसते जगते,
उदासीन जन कभी न लगते,
पकवानों को लज्जित करता
दूध दही माखन का खाना।

तन सुड़ौल मन भोले भाले
सच्ची प्रीत निभाने वाले
हरियाने वालों से सीखे
कोई ग़म को दूर भगाना।

मेहनत में सबसे आगे हैं,
साहस में सबसे आगे हैं
जौहर में सबसे आगे हैं
दिल्ली की धड़कन हरियाना।

रंग बिरंगें बाने वाले
मरू में फूल खिलाने वाले।
जहाँ–जहाँ पे कदम बढ़ाते,
शत्रु खोजते फिरैं ठिकाना।

इस धरती पर स्वर्ग उतारें,
इस धरती पर तन मन वारें,
यही हमारी कर्मभूमि है,
कण–कण है जाना पहचाना।

इसकी उन्नति कर्म हमारा
इसकी रक्षा धर्म हमारा
सीखे इस पर जीना, मरना,
निश्छल, निर्मल प्रीत निभाना।

***

9. समापन

प्रार्थना के शब्द गूँजे जब हमारे कान में,
हो गए तल्लीन हम अपने वतन के ध्यान में,
मृदुल दीपक का उजाला सा हुआ परिवेश में
लुप्त मानस हंस था, कुछ भी न था अवशेष में,
तन तरंगित हो उठा, मन में अतुल संतोष था,
शिथिलता तन छोड़ भागी, जग उठा नव जोश था।

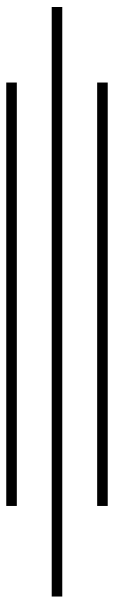
***

-: इतिशुभम् :-

मानस परिक्रमा

हरियाणा की सामाजिक एवम्
सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर केन्द्रित

एकल पात्रीय महाकाव्य



पी0 डी0 निर्मल

एम.ए.बी.टी.

प्रभाकर, साहित्यरत्न

उपवन की दुर्दशा

उपवन की दुर्दशा
देखी न जाती है
माथा ठिनक जाता,
आँखे भर आती है
कभी यहाँ बहुरंगे
फूल खिला करते थे,
गुन गुन गुन गुन करते,
भ्रमर उड़ा करते थे
धरती थी हरियाली
कण कण में खुशहाली
शांत, सरल, मन भावन
स्वर्णिम परिवेश था,
सोने की चिड़िया सम,
अनुपम यह देश था।
आज समाँ बदल गया
पतझर सा सूनापन
उपवन पर छाया है
ना जाने कैसा
मनहूस समय आया है।
कोयल मुँह बन्द किए
टुमर टुमर ताक रही,
कउओं की आवाजें
अंबर को पाट रही।
फूलों का रंग उड़ा
झुकी झुकी पंखुड़ियां।
अध गूंथी मूंज सरिस,
उलझी है वल्लरियां।

हर सूखी शाखा पर
उल्लू सुशोभित है।
निर्जल सरोवर से
सुषमा तिरोहित है।
हंसों की सारस की पातें
परदेश गई
लुप्त हुए पारावत
चिड़ियाँ निश्शेष हुई
गिद्ध यहां जीवों को
खोज खोज खाते हैं
मस्ती में झूम झूम
नभ में मंडराते हैं
मतवाली पछवा का
तूफान उमड़ा है
कल था मकरंद भरा
आज चमन उजड़ा है
माली उन्माद भरा
जीवन बिताते हैं
खाते हैं पीते हैं
हंसते हैं गाते हैं
ना जाने उपवन में
ऋतु बसन्त फिर कब आए
चिंतित है व्याकुल मन
आँखे जल बरसाएँ

***

पी0 डी0 निर्मल
एम.ए.बी.टी.
प्रभाकर, साहित्यरत्न, साहित्यवारिधि

दिनांक : 30.3.2007